वर्ष २१ अंक ५

सितम्बर १९७८ [वार्षिक मूल्य १०)
प्रति १)

Scanned with CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष	अंक
२१	५
सितम्बर	सन् १९७८
भाद्रपद	सं० २०३५

—❀—

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश

२३ पाण्डेय बाजार

आजमगढ़ (उ० प्र०)

—❀—

प्रकाशक

चिरौल सन्त आश्रम

कृष्ण नगर

मथुरा

टेलीफोन नं० १३०६

—❀—

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

—❀—

वार्षिक मूल्य

१०) रू०

एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जाता है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। उसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइल सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-

व्यवस्थापक—
'अमर सन्देश'
२३, पाण्डे बाजार,
आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खोः—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा।

(३) गम खाओ अर्थात बर्दास्त करो। कोई कुछ भी कहे उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक ५] सितम्बर १९७८ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

आरती

आज मेरे आनन्द होत अपार। आरती गावत हूं गुरु सार ॥१॥
किया मैं अचरज प्रेम सिगार। बिराजे सतगुरु बस्तर धार ॥२॥
दरस उन करूँ सम्हार सम्हार। गाउँ गुन उनका बारम्बार ॥३॥
आओ री सखियो जुड़ मिल झाड़। गाओ और दरशन करो निहार ॥४॥
गुरू मेरे बैठे पलँग सँवार। आज मेरा जागा भाग अपार ॥५॥
रही मैं गुरु के सनमुख ठाढ़। करूँ मैं उन चरनन आवार ॥६॥
चाहुं नहिं दूसर से उपकार। गुरू की बाँधो टेक सम्हार ॥७॥
गुरू पर डारूँ तन मन वार। बचन पर उनके रहुं हुशियार ॥८॥
कर्म सब दीन्हे गुरु ने जार। उतारा नौका दे औ पार ॥९॥
सुरत को शब्द सुनाई धार। गगन चढ़ पहुंची घर करतार ॥१०॥
पिंड को छोड़ा चढ़ी मुनार। हुई अति निरमल छुटा गुबार ॥११॥
नाम की सुनी जाय धधकार। बाँसरी सुनी नई झनकार ॥१२॥
सुरत और निरत लगाया तार। गई अब चौथे पद के पार ॥१३॥
मिला राधास्वामी का दीदार। करूँ अब निस दिन उन दरबार ॥१४॥

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक ५
सितम्बर सन १९७८

कहानी—

मृत्यु निश्चित

एक बार चक्रवर्ती महाराजा दशरथ अपने लिए एक नये किले की नींव खुदवा रहे थे। उस समय में लोमश ऋषि आ निकले। उन्होंने आदमियों से पूछा—यह क्या हो रहा है? आदमियों ने उत्तर दिया—चक्रवर्ती महाराज दशरथ के किले की नींव खोदी जा रही है। लोमश ऋषि ने कहा—जाओ राजा दशरथ से कहो कि लोमश ऋषि उन्हें बुला रहे हैं। महाराजा दशरथ ने ज्योंहि यह सुना फौरन ऋषि के पास दौड़ चले उनके समीप जा दंडवत किया और हाथ जोड़ कर बोले ऋषिवर, इस दास के लिए क्या आज्ञा है? ऋषि लोमश जी ने महाराजा दशरथ की ओर बड़ी ही करुणाभरी दृष्टि से देखा और बोले राजन! मुझे एक बात पूछनी है और वह यह कि आप को इस मृत्युलोक में कितने दिनों तक रहना है? राजा दशरथ ने बड़े ही विनीत भाव से उत्तर दिया—ऋषि श्रेष्ठ! यह तो मुझे मालूम नहीं। लोमश जी ने कहा—राजन्! इतना तो आप जानते ही होंगे कि एक न एक दिन आप को यह जगत छोड़कर जाना है। अधिक से अधिक हजार दो हजार वर्ष और रह जांय? बस इससे अधिक तो नहीं न? किन्तु मेरे विषय में सुन लो—जब भगवान शंकर को मैंने तपस्या कर प्रसन्न कर लिया और आशुतोष भगवान ने मुझसे वर मांगने को कहा। मैंने कहा देवाधिदेव यदि आप मुझसे प्रसन्न हैं तो मेरा यह नर तन अजर-अमर कर दीजिये क्योंकि मुझे मृत्यु से बड़ा भय लगता है। भगवान शंकर ने तुरन्त कहा—लोमश यह नहीं हो सकता। इस मृत्यु लोक की सारी चीजें नश्वर हैं देर अबेर सभी विनाश को प्राप्त होंगी यह अटूट ईश्वरी विधान है इसको कोई नहीं बदल सकता। अतः तुम्हारे इस भौतिक शरीर को मैं भी "अजर" 'अमर' नहीं कर सकता। हां! आयु चाहे जितनी मांग लो। सीमा बांध लो क्यों कि सारे भौतिक तत्व सीमित हैं। यह तुम्हारा शरीर भी इन्हीं भौतिक तत्वों का बना है इस लिये यह असीम नहीं हो सकता। राजन्! देवाधिदेव की लाचारी जान कर मैंने कहा अच्छा, तो मैं यह मांगता हूँ कि एक कल्प के बाद मेरा एक रोम गिरे और इस प्रकार जब मेरे शरीर के सारे के सारे रोम गिर जायें तब मेरी मृत्यु हो? भगवान शंकर। तो एवमस्तु! कह तुरंत अन्तर्ध्यान हो गये। फिर भी कुटिया बनाकर रहने के लिए कोई कहता है तो मेरे सामने मृत्यु नाचने लगती है और मैं कह देता हूं कि जब इस देश में रहना ही नहीं है तो कुटिया क्या बनाऊँ। अभी मेरे तो एक पैर के घुटने तक रोम झड़े हैं। इस हिसाब से तो अभी मुझे बहुत वर्ष इस मृत्यु लोक में रहना है।

महाराज दशरथ मृत्यु के भय से कांपने लगे और लोमश ऋषि के चरणों पर पड़कर कहने लगे। भगवन मैं समझ गया। अपने बाहुबल से सारे संसार पर विजय प्राप्त कर

यह विचार किया था कि अब इस किले का निर्माण कर पूर्ण सुरक्षित रूप से आनन्द का जीवन बिताऊंगा। किन्तु मुझे अब ज्ञान हुआ कि मैं काल से रक्षित नहीं रह सकता काल एक न एक दिन मेरा हाथ अवश्य पकड़ेगा। कृपा कर मुझे सत्य का उपदेश दीजिये।

लोमश ऋषि ने कहा राजन! संसार में जितना यश प्राप्त करना था आप ने किया परन्तु अभी तक आप ने अपने लिए कुछ नहीं किया। पता नहीं कब यह शरीर छूट जाये आप सद्गुरु उपदेश लेकर अपना कार्य करें जिससे आत्मा को परमात्मा की प्राप्ति हो जाय और वह सदा के मृत्यु भय से निर्भय हो जाये यही इस देह धरे का सार है। मैंने अपना काम कर लिया है और अब यह शरीर मुझे भार स्वरूप मालुम हो रहा है। किन्तु क्या करूं अब वरदान के कारण मुझे अपनी इच्छा के विरुद्ध यहां रहना पड़ रहा है।

राजा दशरथ लोमश ऋषि का आशय समझ गये और किले के निर्माण के इरादे को छोड़ दिया।

उपरोक्त कहानी को ध्यान में रखते हुए हमें इस संसार को अनिश्चित जान यहां से प्रस्थान के लिए सदा तैयार रहना और गुरु को प्राप्त कर अपने आत्मा को परमात्मा से जोड़कर सदा के लिए आवागमन के चक्र से निवृत होने का प्रयत्न करना चाहिये।

सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय)

गंगा के उस पार शान्त रेतीले मैदान में एवं बाबा विश्वनाथ की पावन नगरी काशी में कर्म योगी, धर्म योगी, सुरत शब्द योगी तपस्वी बाबा जयगुरुदेव द्वारा आयोजित सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय) १५ फरवरी ७९ से प्रारम्भ होगा। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर २१ फरवरी ७९ को पूर्णाहुति होगी। बाबा विश्वनाथ जी पांच देवताओं के साथ पूरे यज्ञ में उपस्थित रहेंगे। आप आना न भूलियेगा। स्वयं आइये, कुटुम्ब परिवार रिश्तेदार मित्रजन सबको लाइये। अवसर मत चूकिये। भक्ति और मुक्ति लीजिये। सतयुग की स्वागत तैयारियों में अपना योगदान देकर अपने जीवन को सफल बनाइये। जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संघ सबका आवाहन करता है।

Scanned with CamScanner

चेतावनी (१)

मुसाफिर रहना तुम होशियार

मुसाफिर रहना तुम हुशियार ।
ठगों ने आन बिछाया जाल ॥१॥
अकेले मत जाना इस राह ।
गुरू बिन नहिं होगा निरवाह ॥२॥
जमा सब लेंगे तेरी छीन ।
करेंगे तुझ को अपना दीन ॥३॥
ठगों ने रोका सब संसार ।
गुरू बिन पड़ गइ सब पर धाड़ ॥४॥
मान लो कहना मेरा यार ।
संग इन तजना पकड़ किनार ॥५॥
गुरू बिन और न कोइ रखवार ।
कहूँ मैं तुम से बारम्बार ॥६॥
होयगी मंज़िल तेरी पार ।
गुरू से कर ले दृढ़ कर प्यार ॥७॥
गुरू के चरन पकड़ यह सार ।
इन्द्री भोग भुलावत झाड़ ॥८॥
यही हैं ठगिया करत ठगार ।
कहें राधास्वामी तोहि पुकार ॥९॥
सरन में आ जा लेउँ सम्हार ।
नाम संग हो जा होत उधार ॥१०॥

चेतावनी (२)

मित्र तेरा कोई नहिं संगियन में

मित्र तेरा कोई नहीं संगियन में ।
पड़ा क्यों सोवे इन ठगियन में ॥१॥
चेत कर प्रीत करो सतसंग में ।
गुरू फिर रंग दें नाम अरंग में ॥२॥
धन सम्पत तेरे काम न आवे ।
छोड़ चलो यह छिन में ॥३॥
आगे रैन अंधेरी भारी ।
काज करो कुछ दिन में ॥४॥
यह देही फिर हाथ न आवे ।
फिरो चौरासी बन में ॥५॥
गुरु सेवा कर गुरू रिझाओ ।
आओ तुम इस ढंग में ॥६॥
गुरु बिन तेरा और न कोई ।
धार बचन यह मन में ॥७॥
जगत जाल में फंसो न भाई ।
निस दिन रहो भजन में ॥८॥
साध गुरू का कहना मानो ।
रहो उदास जगत में ॥९॥
छल बल छोड़ो और चतुराई ।
क्यों तुम पड़ो कुगति में ॥१०॥
सुमिरन करो गुरू को सेवो ।
चल रहो आज गगन में ॥११॥
कल की खबर काल फिर लेगा ।
बही तुम जलो अगिन में ॥१२॥
अब ही समझ देर मत करियो ।
ना जानूँ क्या होय इस पल में ॥१३॥
यों समझाय कहें राधा स्वामी ।
मानो एक बचन में ॥१४॥

Scanned with CamScanner

महात्मा आ ही जाता है, आ ही गया

(सत्संग गुरुपूर्णिमा, गोरखपुर, १९-७-७८ रात्रि साढ़े सात बजे नार्मल स्कूल के मैदान में)

नर नारियों, यह देह किसी अमीर गरीब बच्चे बच्ची की जो दिखाई देती है नदी के किनारे हर रोज कोई न कोई जा रहा। दुनियां का सारा सामान छोड़ चला। मानव ऐसा उत्तम मन्दिर जिसमें कि सब सामान जमा किए थे वह भी जलाकर राख का दिया। भूत बनने की बात भी आप पसंद नहीं करते हो कि मेरे खानदान का मेरे घर का आदमी वापिस आए।

कर्म का फल तुमको भोगना पड़ेगा

अपने अपने कर्मों का तुम्हीं लोगों को फल भोगना है। यह कर्म उसी अवस्था में क्षमा होंगे जब महापुरुषों की प्राप्ति होगी। इसके पूर्व जो भी कर्म करेगा और करके जायेगा उससे एक एक कर्म सय ब्याज के भोग भोगना है। जो हिंसा करोगे, चोरी करोगे आदमी मारोगे, बच्चे मारोगे, स्त्री मारोगे। मनुष्य के मारने का पाप बहुत बड़ा दण्ड है। उसका एक सनातन नहीं किसने सनातन उसके बर्बाद हो जाते हैं।

सब छोड़कर जाना पड़ेगा

भारत में जमीन, बगीचा, मकान, धन दौलत जानवर आदि छोटी छोटी चीजों के लिए केवल अपनी शान-शौकत। न मालूम कौन सा सम्मान चाहते हैं। पट से मर जाते हैं या मार देते हैं।

मानव तन अनमोल है

मानव जीवन की जो कीमत साधकों, महात्माओं ने बताई वह अवर्चनीय है। और मनुष्य के मारने का जो दण्ड ईश्वरीय विधान में जो रखा गया वह ऐसा है जो कहने में नहीं आता। देश में जो हो रहे कत्ल, छोटी-छोटी घटनाओं के फलस्वरूप, इनको आप लोग मत करें। जानवर, पशु, पक्षियों की हिंसा मत करें। इन सभी घोर अपराधों से घोर पापों से बचें। और अपने जीवात्मा की रक्षा बचे हुए समय में करें।

यह समय बचने के लिए मिला

यह समय आपको बचने का मिला है। समय समझने का मिल गया अब इससे स्पष्ट और कोई बात नहीं समझाई जा सकती। मनुष्य वही है जो इशारों में सब बात समझ ले। वह मनुष्य, मनुष्य नहीं है जो कहने पर भी न समझे।

सभी धार्मिक पुस्तकें नीति से भरी हैं

भारतीय सिद्धान्त धार्मिक पुस्तकों में इतना लिखा हुआ है कि आप उसका अमल करने लगें। उसको धारण कर लें तो कोई ऐसी नीति नहीं है जो अपनी धर्म पुस्तकों में न हो। रामायण उसका भण्डार है। गीता, इत्यादि भागवत वेदों और शास्त्रों में भरा हुआ है।

Scanned with CamScanner

मनमुखी नियमों से दुख मिल रहा है

हम लोगों ने अब से अपने मनमुखी इच्छाचारी नियम बना लिए उसी का यह फल है। जो हम सभी लोगों को आदान-प्रदान में मिल रहा है।

भगवान ने प्रार्थना स्वीकार की

मैं यह जानता हूं, समझ रहा हूं कि आप बहुत दुःखी हैं। तकलीफ में हैं। मैं यह भी समझ रहा हूँ कि भगवान से मैं बहुत दिनों से प्रार्थना कर रहा था। और उन्होंने आपके कष्टों के निवारण हेतु प्रार्थना को स्वीकार कर लिया। जब उन्होंने यह स्वीकार किया तो आपके सामने रखी जा रही है।

आगे का प्रबन्ध करो

अभी तो पहला जीवन आपका है ये। आगे कहां कहां जाओगे उसके लिए भी इन्तजाम करो। तो यही समझ लेता १० वर्ष २० वर्ष, २५-५० वर्ष तो आगे कहां जाना है वहां का भी इन्तजाम करो। उसका भी प्रबन्ध तो करना ही है। मनुष्य कही है जो अपनी आगे की यात्रा का प्रबन्ध कर ले अब वह आज तुमने भोग लिया आगे का प्रबन्ध किया नहीं तो फिर रोयेगा कौन ? कोई मैं तो रोने आऊंगा नहीं और आप पछतायेंगे।

सदाचार, चरित्र और शाकाहार का सेवा और प्रेम का संगठन बनायें

इसलिए आप लोग एक ऐसा देश के अन्दर संगठन सदाचार, चरित्र का शाकाहार क. सत्यता, प्रेम, सेवा का स्थापित करें। यदि पहले ही स्थापित कर लें तो हम तो अपना अहो भाग्य समझेंगे कि बिना मेहनत के आप लोगों ने इसको ग्रहण कर लिया। और मेहनत करने पर तो ग्रहण करना ही है आपको। पर भारत में अब सदाचार, सत्यता, प्रेम और दया, मानवता और अहिंसा परमो धर्मः।

मांसाहारी सर्व भक्षी जस बकरी तस गाय।
और मीन मांस जो करे अहारा।
चौसठ जन्म गिद्ध औतार॥

मांस खाने से गिद्ध की योनी

चौसठ हजार जन्मों तक गिद्ध का जन्म मिलता है और उसमें उसके अतिरिक्त और कुछ आपको खाने को नहीं मिलेगा सिर्फ मांस खायेंगे और नहीं। बैठे-बैठे रोइये। बगैर मांस के आपका पेट भर नहीं सकता है। चौसठ हजार वर्ष तक गिद्ध को मांस खाना पड़ता है और गिद्ध की योनि में रहना है। तो दिनो रात जो काम आप कर रहे हो क्या हालत होगी ? तुम सभी सोचो।

गाय की हत्या के लिए महीनों गंगा स्नान करते थे

अभी हमारे सामने की बात है लोग कितना घृणा करते थे। गंगा स्नान गाय के मारने पर। महीनों मुंह ढककर चिल्लाते थे। गांव के लोग रोटी उसको जंगल में देने जाते थे कि इसको अपराध लग गया और गंगा स्नान करने के लिए महीनों रहते थे। घर में आकर के उस अपराध को दूर करने के लिए भोज करते थे। अब आपने यह क्या कर डाला।

खान पान शुद्ध करो

इसलिए साधन भजन; भगवान की प्राप्ति और आत्माओं का कल्याण, तो तभी होगा जब आप अपनी शुद्धता को धारण करें। खान-पान को शुद्ध करोगे उसी के आधार पर मन, बुद्धि, चित्त काम करेगा। आंख और जबान और कान काम करेंगे। अच्छा भोजन अच्छे विचार, गन्दा भोजन गन्दे विचार।

Scanned with CamScanner

शराब से मांस खाना फिर व्यभिचार आता है

शराब और इसके पीने का आधार मांस। और मांस और शराब के खाने का आधार बदमासी दुराचार व्यभिचार। बगैर उसके काम नहीं। तो जिस चीज का गुण है वह सामने आयेगा और भारत में यहीं होता रहा। अब तकलीफ, गल्ती तो हो गई। तकलीफ तो उठानी पड़ रही। लेकिन वह जो तकलीफ आपने गल्ती की है। उसकी जो तकलीफ आपको मिल रही है, उसको तो वहीं छोड़ो। उसके लिए यह प्रार्थना करो कि क्षमा हो जाय। और आगे हम तोबा करते हैं। अब आग हम कभी नहीं करेंगे। ऐसा काम आप अपने विचार परिपक्व बना लो।

संकल्प करो तो होगा

ऐसा संकल्प करो कि आपकी प्रतिज्ञा अपने जीवन में बचे हुए समय में पूरी उतर जाय। तो साधन भजन कराने का। ध्यान भजन कराने का। अन्तर में साक्षात्कार। जीवात्मा को नाम में जोड़ने का, ऊपर की तरफ चढ़ाने का, वेद-वाणी, आकाशवाणी नाम ध्वनि सुनाने का अपना काम तो यही २४ घंटे का और यही काम करता ही हूं। जो आदमी जिस काम को करता है उसमें अच्छी तरह माहिर जानता है उसको। लेकिन आप जानते नहीं तो आप करोगे और करोगे कैसे। बहुत मुश्किल हो जायेगा।

वेदवाणी सदैव बुला रही

तो इसलिए यह शब्द, आसमानी आवाज यह भगवान की वह वेदवाणी। ब्रह्मवाणी है जो आप को सदैव ही बुला रही है। क्या गुरुपूर्णिमा का इतना अच्छा सुहावना अवसर है जो धीमी धीमी बूंदे गिर रहीं। हां देखो अब भी बैठे हुए हैं। क्या सुहावना अच्छी यह गुरुपूर्णिमा का। यह मालुम है आप को? यह शुभसूचक चिह्न है। तो गुरुपूर्णिमा के दिन अगर बारिश न हो तो गुरुपूर्णिमा किस काम की?

उधर पानी नहीं बरस रहा

मुझको पटना में लोगों ने बताया कि गोरखपुर की तरफ में बारिश नहीं। तो हमने लोगों से कहा, रोवां में अभी ८-९ तारीख को हम जब जायेंगे तो आप को बारिश मिलेगी घबड़ाने की बात नहीं है। चिंता मत करो।

यहां लोग कह रहे थे कि सूखा पड़ गया

जो उधर से आया तो देखा कि तमाम बारिश। और यहां सब लोग चिल्ला रहे थे कि सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया, सूखा पड़ गया। आपको मालूम नहीं है कि चारों तरफ वर्षा हो रही है यहां नहीं हुई। लेकिन आप जानते नहीं हो कि जहां भक्त रहते हैं वहां जानते हो कितना अनाज हुआ था।

आपको तो यह बात मालूम नहीं है। देखते देखते कितनी तेजी से। उनका एक महीने पहले का और तुम्हारा एक महीने बाद में लेकिन साथ ही साथ कटेगा। यह तो तुम जानते नहीं हो।

गुरुपूर्णिमा में वर्षा की कुछ छींटे पड़नी चाहिये

तो इसमें जरूर कुछ न कुछ छोटे बूंदे बांदी कुछ न कुछ होना चाहिए गुरु पूर्णिमा के अवसर पर। यह बात नहीं है यह तो बड़ा अच्छा सुहावना समय है। हम लोग रोज स्नान करते हैं। सबह कर लिया तो फिर और नहा लगे। क्या बात है। तो वर्षा हो रही है।

वर्षा किस लिए हो रही है

लेकिन किस लिए यह वर्षा हो रही है कि यह बताया जा रहा है लोगों को कि यह लोग पानी में भी हटने वाले नहीं हैं। यह हटने-बटने

Scanned with CamScanner

वाले नहीं हैं। यह सोचना कि बूंदे गिरेंगी यह भला जायेंगे? यह हटने-बटने वाले नहीं हैं। चाहे जितना पानी गिरे, आंधी आए, यह करे, वह करे।

देवता भी आंधी में बंधे पड़े रहे

यह तो आपने अयोध्या में देखा कि कितनी तेज की अयोध्या में आंधी आयी कि आदमी को और उनके कपड़ो को उड़ा ले गयी। लेकिन सब खड़े रहे पानी में। वह भी दिन आपने देखे। और वह सब घटनाएँ होते हुए देवता प्रसन्न कर लिए गये! उनको खूब अच्छी तरह से बांध कर रखा गया आंधी में कि आप यहीं रहिये। यह देखिए सबके सब जो यहां आये हुए हैं पड़े हुए हैं। आपको भी जाने नहीं देंगे। तो बंधे पड़े रहे वहां। और ऐसा उनको बांध कर के रखा कि भोजन करा कर के, प्रसन्न करके सम्मान के साथ भेज दिया।

अयोध्या में कौन देवता प्रसन्न किये गये यह आज तक नहीं बताया

अब वह कौन देवता थे यह आज तक नहीं बताया। वह देवता कौन थे यह आज तक आपको नहीं बताया और यह बताने की बात भी नहीं। तो इसलिए यह बताने वगने वाले कोई नहीं हैं।

मिल मालिक इनको देखने आते थे

जब गुजरात में साबरमती नदी में यह पड़े थे तो बड़े बड़े मिल मालिक इनको देखने आते थे। ओहो क्या पूछना है। यानी मेरे भारत में अब भी धर्म है। मैंने लोगों से कहा कि यह हमारे गुदड़ियों के लाल हैं। यह लाल हैं। यह बालू में गुदड़ियों में छिपे पड़े हुए हैं। अब इसको देख लीजिए आप। कोई कुछ कहता था, कोई कुछ कहता था, कोई कुछ कहता था कोई कुछ कहता था। एक ही बार धमाका हुआ सारा गुजरात जाग गया। एकदम होश में आ गया। जैसे इनको भगवान गये एक दफे में जगा दिया। अब बाकी गुजरात की जनता कृष्ण भगवान के पीछे हो गई। ऐसा ही दूसरा धमका काशी में होने वाला है। अब फिर देखियेगा और।

नाराज मत होना आठ माह पहिले चले गये तो

अब यह देखो एक बात आपको समझा दें। नाराज मत होना। मनुष्य शरीर किराये का मकान है। मान लो आठ महीने के पहले आपका समय पूरा हो जाय तो आपको किराये के मकान से जाना पड़ेगा। काशी का अवसर नहीं मिलेगा। यह सत्य है। फिर वह आप नहीं देख सकते हैं।

भजन करने से स्वासें कम निकलती है

एक बात जरूर है के अगर भजन करने लगोगे तो स्वासें आपकी ऊपर चढ़ जायेंगी। और वह स्वांस नहीं निकलेगी तो आप काशी का अवसर देख सकते हो। क्योंकि भजन करने में स्वांस निकलती है कम। और भजन करोगे उतनी स्वांसें कम निकलेंगी तो काशी तक पूरी हो जयेंगी। देखो हमने कैसी युक्ति बढ़िया बताई कि काशी का प्रोग्राम भी देख लो, आनन्द भी उसका ले लो और चले जांय तो कोई परवाह भी नहीं है।

कोई देखभाल करने वाला तो है ही

अरे भाई आपकी तो कोई न कोई देख भाल करने वाला है ही आपको फिर परवाह क्या करनी। लेकिन काशी का भी आपने आनन्द ले लिया और यह समय भी आपका वहां तक चला गया। और उसके साथ एक और, क्या लाभ कि भजन कर रहे। असली काम तो यह है भजन कर रहे। वह अलग जमा आपका

Scanned with CamScanner

हो रहा। तो चिन्ता तो किसी बात की है, नहीं है। यह भी ले लिया और इधर भजन करके भी जमा कर लिया। और काशी तक पहुँच गये वह भी ले लिया। दोनों काम।

यह शरीर किराये का मकान है

यह किराये का मकान है। जब राम जाने लगे और यह खबर मिली कि वह गिर गये कुर्सी से राजा दशरथ तो उन्होंने मुड़कर के उनकी तरफ देखा नहीं। ठीक है जो होता है होता है। हमको जो काम मिला है हम अपना काम करेंगे। हमको वनवास मिल गया हमको जंगल में जाना है। कारण बनेगा कार्य होगा। मैं अपने उस पिता की मोह ममता में फंस जाऊं तो वह तो बच नहीं सकते उनको जाना ही है। मैं उसमें क्यों आसक्ति में पड़ चल दिये और वह पीछे से गुजर गये मर गये शरीर शान्त उनका हो गया लेकिन राम ने मुड़ कर नहीं देखा।

शरीर नश्वर है

तो शरीर है यह नश्वर किराये का मकान इसमें जीवात्मा बैठी है इसे बरामद होना है। महापुरुष आते हैं जीवात्मा को बरामद करने के लिए। तो उसको निकालकर के नाम के साथ जोड़ दिया। बस इतना काम उसको करना। और नाम के साथ में गठबन्धन गांठ लगा दी। लो अब तुम्हारा सुहाग हो गया। अब सुरत, तुमको नाम नहीं छोड़ सकता है और सुरत अब तुम नाम को नहीं छोड़ सकती हो। अब तुम्हारा विवाह हो गया। किसका? सुरत का, जीवात्मा का।

महापुरुष सुरत को नाम से जोड़ते हैं

तो महापुरुष बड़े होशियार होते हैं यह गठबन्धन करके सुहाग कर देते हैं। उनका काम ही यही है। अगर सुहाग नकरे, गठबन्धन करके, तब तो फिर मतलब यह है उनके मिलने का और उनके बताने का मतलब ही क्या है?

यह खजाना है मानव रूपी मकान में

तो यह बड़ी भारी सम्पत्ति खजाना अपने मानव रूपी मकान में भरा हुआ है। जब उसका मुँह। दरवाजा उसका तेजी से खुलता है तो हर ....र....र....र। जब वह हर्राता है तो तीनों लोक इस तरह से थर्राते हैं। कम्पायमान होते हैं इस तरह से सारी सृष्टि नाम की, शब्द की, आवाज की sound की। बाग हैं, बगीचे हैं। नाले हैं। फूल है, पत्ती है। समुद्र है, पानी है। वह सारा का सारा आसमान हो। वायु हो कुछ भी हो। वह सब का सब नाम का शब्द का।

सब रचना उधर चैतन्य की है

चैतन्य गुलजारा, मजारा, दृश्य दिखाई देता है। यह चैतन्य नाम की सृष्टि। उसमें चैतन्यता है जड़ता का कोई नाम नहीं। और यहां जड़ता है उसमें एक नाम मात्र की चेतन्यता वह भी जड़ता में मिश्रित हो गई। और यह चेतन्यता अपना होश खतम कर चुकी है।

महात्मा चेतन को बरामद करते हैं।

इसलिए महात्मा उस चेतन्यता को बरामद करते हैं। निकालते हैं। और निकाल-करके उसी छोटी सी अणु और कणमात्र चेतन्यता को उसके साथ जोड़ देते हैं। यह काम होता है महात्माओं का। और क्या काम होता है।

बाहर का ज्ञान उधर काम नहीं देता

यह बाहर की विद्या बुद्धि और यह पढ़ना लिखना यह काम नहीं है। यह तो काम अनुभवी पुरुषों का है। वह जानते हैं कि इस काम को। हमें वह बात महापुरुषों की खिचड़ी है।

Scanned with CamScanner

सभी धर्म वाले दूर हो गये

हम लोगों ने महापुरुषों की बातों को सीखना कुछ वर्षों से बन्द कर दिया इसलिए हम असली विद्या से शून्य रह गये। मुहम्मद। हिन्दू मुसलमान ईसाई। और हिन्दू मुसलमान ईसाई सब के सब अपने अपने रास्ते को छोड़कर गलत रास्ते पर चले गए। अब फकीर कोई भी हो महात्मा कोई भी हो जिसको सन्त कहते हैं कोई भी हो। वह आए और आकर के सारे मानव इन्सान जाति को हकीकत का पैगाम सत्यता का सन्देश Truth आपको बताए। तब यह बात आपकी समझ में आ जाती है।

सत्य को सब चाहते हैं

उसी की जरूरत सबको है। ज्ञान अज्ञान में सब लोग उसको चाहते हैं। न मिलने के कारण लाचार और विवश हो जाते हैं। चाहते सभी हैं। कोई ऐसा नहीं है जो सचाई को नहीं चाहता हो। सत्यता को, चैतन्यता को नहीं चाहता। लेकिन उसके सामने कोई जरीये कोई शक्ति कोई साधन, कोई विवेक कोई बुद्धि नहीं है जो उस सचाई को पाले।

महात्मा सहयोग करते हैं तो काम बनता है

उनसे सहयोग और महात्माओं की कृपा लेना। जब सहयोग मिला। महात्माओं की दया हुई तो सचाई प्रगट होने लगी। वह सत्यता आपके सामने आई और उसका जो कुछ भी आनन्द ज्ञान वह सब आपके सामने प्रगट होता है। फिर जीवात्मा नाम को पकड़ कर ऊपर चढ़ती है। बड़े बड़े ब्रह्माण्ड बड़े बड़े लोक। नदियां। विधिवत। भव्य भरपूर। प्रेम शक्ति आनन्द, ज्ञान। ये दृष्टिगोचर दिखाई देते हैं। और उन लोकों और उन जीवात्माओं से मिलकर के कितना मजा और आनन्द बात करने पर देखने पर उनकी शकल और सूरत उनके प्रेम। और जो कुछ भोजन करते हैं उस भोजन को लेकर उस गिजा को खाकर के कितनी मस्ती। कितना सुरूर और कितना आनन्द सवार होता है। वही साधक, वही प्रेमी, वही जिज्ञासु, और वही चाहने वाला जानता है। और कोई उसको जानते नहीं।

बड़ी बड़ी रचनायें हैं

इसलिए आपके लिए बड़े बड़े लोक, उस परमात्मा खुदा ने बड़ी तरतीब और सिलसिले-वार एकतरफा उसने बना रखे हैं। तो उसकी तरफ में चलो। और अपने अपने देशों में पहुंचकर के वहां का आनन्द लो।

अलग अलग सृष्टि में अलग अलग आनन्द

स्थूल सृष्टि में स्थूल इन्द्रियों का क्षणिक आनन्द। और लिंग सृष्टि में लिंग सुगन्धि का आनन्द। और सूक्ष्म सृष्टि में मानवीय नूर यानी प्रकाश का आनन्द। और कारण शरीर में शब्द का आनन्द। अपने अपने शरीर में और अपनी-अपनी उस स्थान की अवस्था में पहुंच कर यह आनन्द लो।

इसी आत्मा में बड़ी शक्ति आ जाती है

और उसके बाद जब कारण शरीर के परे चलो तो यही जीवात्मा रचना करने की शक्ति को धारण कर लेती है। विविध भांति की बड़े बड़े मण्डलों में रचना कर देती हैं। और उसको सबको समेट कर और फिर उसका विस्तार अनन्त रूप में करती है। जो किताबों में लिखने में नहीं आता।

जीवात्मा पर खोल हैं जिससे शक्ति गुप्त है

जीवात्मा वही है जो मनुष्य शरीर में बैठी हुई है। जब यह चारों शरीरों के खोल को उतार करके और परे गुणातीत होती है तो उस समय पर रचना करने की इसमें शक्ति प्रदान हो जाती है। और बड़ी बड़ी रचना करती है। वहां रहीं

Scanned with CamScanner

की जीवात्माओं की रचना को देख कर इतना बड़ा उस कुदरत का कारखाना आश्चर्यजनक मालूम होता है कि इशारे और वाणी या लिखाई से कुछ बताया नहीं जा सकता। ऐसा वहां तमाशा और नजारा और दृश्य हो रहा है।

महात्मा ने देख कर लिखा

यह महापुरुषों ने अपनी आंखों से जब-जब कभी आकर के देखा तो किताबों में आपके लिए लिखा। क्यों कि वह जाने लगे तो किताबों में लिख गये ताकि मेरे प्रमाण पीछे रहेंगे। लोग बतायेंगे कि औरों ने भी इन सभी दृश्यों को देखा था और आपको भी देखना चाहिए। इसीलिए आप इस मनुष्य शरीर में आए हैं। इसी तरह से देखते-देखते चलते-चलते देखते-देखते मालिक आपको साथ साथ ले चलेगा और अपने परम लोक में, परम धाम में, सत्य देश में, सत्यलोक में यह जीवात्मा दाखिल हो जायगी, प्रवेश हो जायगी। जहां मौत का, जहां काल का, जहां छोटे और बड़े का। आने जाने का कोई भी किंचित मात्र, अणु मात्र भी इसमें शंका गुंजाइश करने का जरुरत नहीं। न कोई शंका का कोई गुंजाइश है।

यही जीवात्मा जाती है

वह फिर लौट करके कभी भी जीवात्मा यहां नहीं आती। इसी शरीर के द्वारा चढ़ेगी। वहां जायेगी आयेगी। फिर जायगी फिर आयेगी। और यहां समाचार सबको बतायेगी। यहां की प्रेमी भक्त जीवात्माओं को ले जायगी। और फिर आयेगी जायेगी।

सन्तों ने कृपा की सब पहुंचती हैं

इस तरह से सन्तों ने यहां आकर के बहुत सी जीवात्माओं पर जो कृपा दृष्टि की उससे शुद्धता, निर्मलता उसको मिली। और नाम के साथ जोड़कर के ले गये। और पहुँचा दिया। और बहुत सी जीवात्माएं वहाँ पहुंच गई। वहां पहुंचने वाली जीवात्माओं, उन महापुरुषों को मालूम होता है कि कितने मुद्दत यहां हो गए रहते हुए और कैसे पहुँचाई गई। उस खुदा को, उस मालिक को, उस प्रभु को उन जीवात्माओं को ले जाने की कितनी खुशी होती है जो कहने में नहीं आती।

महात्मा अथक परिश्रम कर रहे हैं

इसलिए मेहनत महापुरुषों की जो भारत भूमि पर मानव शरीर की जीवात्माओं के लिए हो रही वह लिखने में नहीं आ सकती। भारत में हमेशा महापुरुषों का आगमन उन महान आत्माओं का हमेशा विद्यमान और उपस्थित रहेगा जो मालिक को पाते हैं।

गड़बड़ी होती है तो शक्तियां ठीक करने आते हैं

और जब गड़बड़ियां हो जाती हैं तो फिर वही सन्त स्थानीय मालिक से कह देते हैं कि भारत भूमि पर धर्म क्षेत्र, कर्म क्षेत्र भूमि पर बड़ी गड़बड़ी हो गई। दुराचार, पाप के घड़े भर गये। और उसके लिए जल्दी से आप किसी न किसी को यहां से भेज दीजिए जो वहां की चरित्र वान जीवात्माओं की रक्षा और दुष्टों का सफाया और धर्म की स्थापना हो जाय।

शक्ति के आने पर सन्त महात्मा चुप हो रहते हैं

फिर वह शक्तियां आती हैं और काम करती हैं सन्त महात्मा चुपचाप रहते हैं। एक तमाशा देखा करते हैं और कहते हैं देखा?

इस समय पर भी वह शक्तियां सन्तों के सम्बन्ध में बराबर कहती जाती हैं। और अब और आगे भी आपको सुनने को मिलेगा।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश
वर्ष २१ अंक ५
सितम्बर सन १९५८

आज गुरूपूर्णिमा है। वह मालिक गरीब नेवाज है

इसलिए आज गुरूपूर्णिमा है। दर्शन देने आए, दर्शन करने आए। आप खुद अच्छी तरह से आंखों से देख रहे हो। कानों से सुन रहे। बुद्धि से विचार कर रहे हो। मालिक प्रभु की राह में अपने को रोड़ा बनकर गिर जाओ। पड़े रहो कभी तो उस रास्ते से वह गरीब निवाज चक्कर मारेगा। जिस दिन निकलेगा उधर से उसी दिन उठाता हुआ चला जायगा। लेकिन हमें राह का रोड़ा बनना। और कंकड़ों की भांति गिर जाना। मालक की दया निश्चित होगी। लेकिन अपने को रास्ता नहीं छोड़ना।

सेवरी रास्ते में पड़ी रही

इसी आशा में वह सेवरी जो पड़ी रही। जिसको बताया गया कि बहुत दिनों के बाद राम आयेंगे। किसने बताया था? उसके गुरू ने। कि इधर से राम आयेंगे और तुमको निःसन्देह दर्शन होगा। क्या कभी कोई कह सकता था कि राम आयेंगे। उस समय तो बनवास भी नहीं हुआ था। और सेवरी को दर्शन मिलेगा लेकिन इतनी वह गरीब कुजात की। रोड़ा बनकर रास्ते में आशा लगाकर पड़ गई। और उसी रास्ते से राम को जाकर उसके बेर खाने पड़े जूठे। और उस गरीब नवाज गरीब को बेचारे गरीब नवाज ने उसका काम किया।

रास्ते का रोड़ा बन जाओ

तो मार्ग के, रास्ते के रोड़े बन जाओ और उसके दर पर लेट जाओ। हर वक्त उसके दर पर बैठ करके हाजिरी देकर उसको पुकारते रहो। इस तक आवाज को पहुँचाते रहो कि हम भी गरीब हैं। तुम्हारे दरवाजे पर आ करके गिर गए। कभी न कभी हमारे ऊपर भी मेहर कर दो। इतना ही तो आप से काम है और क्या है। इसी बेकली और बेचैनी में इन्तजार करते रहो आ जावगा। आ ही जाना है, आ ही गया।

सभी ने गिरकर इन्तजार किया

मीरा ने भी बहुत इसी तरह से इन्तजार किया। और लोगों ने भी ऐसा ही इन्तजार किया। गिर गये। मिल गए वे। कबीर को मिले, तुलसी दास जी को मिले, रैदास को मिले, पल्टू साहब को मिले बहुत से साधू सन्त उनको मिल गए इस गृहस्थ आश्रम में। यह सबसे अच्छा आश्रम है। लेकिन यह है कि जिम्मेदारी समेटो मत। बाकी अपनी शक्ति से परे की बात है तो मालिक पर छोड़ दो। यथा शक्ति जितनी आप में क्षमता हो उतनी तो आप सेवा करो। और उसके बाद कहो कि यह आप कीजिए। तो हर वक्त मालिक हर चीज में आपको सहयोग अपना योगदान अपनी शक्ति का। अपने ज्ञान और प्रेम का देता रहेगा। और सेवक को प्रेमी को कष्ट में नहीं पड़ने देगा। लेकिन जब तुम उसका आसरा छोड़ दोगे तो मुश्किल हो जायगी।

बूंदें डरवाने के लिए थीं

देखो डरवाने के लिए कैसी बूंदे पड़ीं। लोगों ने सोचा कि अब तो पानी गिर गया अब क्या करेंगे जाकर। लेकिन आपको यह मालूम है कि पानी गिरते में भी बाबा जी नहीं छोड़ते। रीवा में शाम को, ९ तारीख को जब कार्यक्रम एक बहुत बड़े पार्क में हो रहा था। तो ऐसी भीड़ उपस्थित थी।

ये भीड़ कहीं बाहर से नहीं आई है

एक बात आपको बता दें लोग बहुत से आदमी सोचते होंगे कि बहुत दूर से आये होंगे। एक दो आदमी की चार आदमी की तो बात नहीं करता हूं लेकिन यह सब के सब

ज्यादातर आपके स्थानीय आदमी हैं। निकटवर्ती, दूर के आये हुए नहीं हैं। दो चार चले आए होंगे। दूर के पास के जिलों से वह तो अलग बात है। लेकिन सब के सब यह स्थानीय आदमी हैं। मैंने सबको मना कर रखा था कि आप काशी की तैयारी करो। गुरुपूर्णिमा वहां हो जायगी। कोई चिन्ता मत करो। जो गुरुपूर्णिमा का फल होगा वह तुम काशी की तैयारी करोगे तुमको यहीं मिलेगा।

मैंने लोगों को यहां आने से रोक दिया

यह अगर बात मैं अभी पिछले महीने में जो मैंने ७ तारीख से दौरा किया उसमें बताता चला आया। यह कहीं कह देता कि गुरुपूर्णिमा में आप लोग आइयेगा। दर्शन दीजिएगा। तो फिर क्या है तौबा तौबा।

तौबा समझते हो? अभी मैं आपको बताये देता हूँ।

तौबा की कहानी (नासमझी की कहानी)

एक मौलवी साहब पढ़ाते थे। किसी ने कहा अरे मौलवी साहब आपको मालूम नहीं है कि रमजान आ रहा। और बहुत परेशान करेगा एक महीने। तो लड़के सोच रहे थे। उन्होंने पूछा कि रमजान क्या चीज है?

उन्होंने कहा कि भई क्या बताया जाय। ऐसा रमजान है कि बड़ा परेशान करेगा। दिनभर परेशान।

लड़कों में बड़ी उत्सुकता आई। उन्होंने पूछा भई रमजान क्या चीज है?

अरे कहने लगे बच्चों मैं रमजान के बारे में क्या कहूँ।

कहते हैं रमजान किधर से आयेगा? हाथी है कि घोड़ा है कि आदमी है। क्या चीज है रमजान?

कहने लगे अब क्या बताऊं रमजान। इधर मक्का मदीना की तरफ से सुबह आयेगा।

तो लड़के पूछने लगे किस तारीख को?

तो तारीख बता दो।

बोले सुबह कब आयेगा? कहने लगे सूरज निकलने के पहले ही आयेगा।

लड़कों ने क्या काम किया। वह सब तो जानने बूझते तो कुछ थे नहीं। लाठी लेकर के और चार बजे गांव के बाहर चले गए और बैठ गए रास्ते में। एक मौलवी साहब अपने बच्चे को लेकर ऊंट पर चढ़े चले आ रहे थे। तो ऊंट कर-रहा था बल बल बल बल।

लड़कों ने सोचा वे तो लड़के ही थे। तुरन्त ही उन्होंने सोचा कि यह आ गया रमजान। बस चारो तरफ से घेर लिया और लगी मार होने रमजान पर। तो ऊंट को उन्होंने मार कर गिरा दिया। और इतना मारा उसके पीठ में मुंह में कि मौलवी साहब और उनका बच्चा तो उधर गिरे और ऊँट मर गया।

तो मौलवी साहब बोले कहने लगे तौबा तौबा। तौबा।

तौबा, उसको कहते हैं कोई आश्चर्य की बात हो गया। तौबा, तौबा, तौबा।

यह क्या हो गया।

लड़के बोले कहने लगे तौबा को भी खतम करो।

फिर बड़ा मुश्किल हो जायगा फिर मौलवी साहब जो दाढी रखे थे उस पर जुट गए। और उसको भी गिरा दिया और उसको भी खतम कर दिया।

तब तक उनके लड़के ने कहा लाहौल बिला कूवत।

लाहौल बिला कूवत भी एक आश्चर्य की बात है कि ऊंट मर गया। यह हमारे बाप को भी मार दिया। यह क्या? लाहौल बिला कूवत।

लड़कों ने कहा लाहौल बिला कूवत को भी

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश
वर्ष २१ अंक ५
सितम्बर सन १९९८

जल्दी खतम करो। तो लड़के फिर जुट गए और उसको भी खतम कर दिया।

अब डन्डा लेकर के आए जब स्कूल में प्रवेश हुए तो डन्डे फेंक दिये और कहा कि मौलवी साहब अब आपको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है। मैं रमजान को खतम करके आ गया। अब कोई जरूरत नहीं।

कहने लगे क्या मतलब ?

कहने लगे मैंने सुबह चार बजे बाहर घेर लिया।

कहने लगे रमजान क्या देखा तुमने।

कहने लगे वह बल बल बल बल करता हुआ चला आया था। उस पर एक मौलवी बैठे थे। एक लड़का बैठा था। मैंने लाठियों से उसको गिरा दिया और मारकर खतम कर दिया।

तो मौलवी साहब बोले-कहने लगे तोबा-तोबा।

अरे कहने लगे मौलवी साहब हमने तोबा को भी खतम कर दिया।

कहने लगे वह क्या किया कि मौलवी साहब दाढ़ी वाले उनको भी मार दिया।

कहने लगे लाहौल बिला कूवत।

अरे कहने लगे मौलवी साहब लाहौल बिला कूवत को भी खतम कर दिया।

कहने लगे वह क्या किया ?

कहने लगे लड़का था उसको भी खतम कर दिया।

अब मौलवी साहब बिल्कुल चुप कि कहीं कुछ कर द तो उन पर भी डण्डा न पड़ जाय।

असली बात तो समझते नहीं

तो असली बात यह है। मतलब का मतलब। बात कुछ है मतलब कुछ है। उसको जब लोग नहीं समझ पाते हैं तो फिर क्या हो।

यह आदमी स्थानीय हैं

तो यह आदमी जो हैं यह स्थानीय हैं इन्हीं आदमियों का यह सब कुछ संगम हो रहा और मैं तो जैसे और जगह सत्संग करता हूँ तो ऐसी इससे भी ज्यादा बहुत भीड़ होती है। वैसा ही मैं यह कार्यक्रम करने के लिए चला आया। वैसे अभी हमारे महन्त जी ने स्कूल दिया था। जो गोरखनाथ जी के महन्त जी हैं उन्होंने अपना स्कूल दिया था अभी पिछले दिनों में। पिछले महीने में मैं यहां होकर गया ही था। लेकिन आप लोगों ने बहुत जोर लगाया तो सोचा कि चलो अच्छा है कि आपको समय दे दिया जाय। तो समय गुरूपूर्णिमा के अवसर का दे दिया।

आप रूढ़वादी मत बनो कि हमेशा गुरु पूर्णिमा गोरखपुर में ही होगी

वैसे आप कोई रूढ़िवादी मत बनो यह ऐसा कभी मत कहो कि मेरे गोरखपुर में गुरूपूर्णिमा बहुत दिनों से मनाई जाती है तो हमेशा मनाई जाय। बल्कि आपकी कांक्षा यह होनी चाहिए कि औरों को भी शुभ अवसर मिले। दूसरों की भलाई के लिए भी सोचना चाहिए। और हम भी यहां से चलकर के वहां से कुछ लेकर के आएं और कुछ सीखकर आएं। आपने जो कुछ दिखाया और सिखाया उसको लोगों ने सीखा। लेकिन दूसरी जगह जाओगे तो आप बगल में पड़ोस के जिले में, पास में कहीं भी होगा तो आप भी उसमें शरीक होगे। तो सबको सबका अवसर मिलना चाहिए।

इतवार बृहस्पत का सतसंग फिर करने लगें

अब मैं आपको गोरखपुर निवासियों को यह बता दूं कि जो भी सतसंग हो रहा है। इतवार का बृहस्पत का मंगलवार का फिर से जारी कर दें। अपनी अपनी सुविधा के अनुसार

इन क्षेत्रों में जो सत्संग हो रहा था वह फिर प्रेम के साथ में फिर से दुबारा। क्यों मना किया था यह मैं समझता था। अब फिर से जारी कर दें। और सब जगह सत्संग होने लगे जगह जगह। और काशी के कार्यक्रम की सूचना लोगों को सब जगह। जगह-जगह मिलने लगे। अभी थोड़े दिनों में सभी स्थानों को यह सुना दिया जायगा कि सब जगह सत्संग को प्रारम्भ कर दें। और सत्संग पर आपका विशेष लक्ष्य और ध्यान होना चाहिए। सत्संग में प्रार्थना, ध्यान, भजन और परस्पर प्रेम। आदान प्रदान की सेवायें। एक दूसरे के काम आना। केवल सत्संग में इस प्रकार का कार्य आपका होगा।

सच्चा रिश्ता गुरूभाई का

यह सब जो इकट्ठे हुए हैं गुरूपूर्णिमा के अवसर पर यह सच्चे गुरूभाई हैं। यह जो आपके घर में भाई पैदा होते हैं उनसे भी ज्यादा। और बहुत बड़ा रिश्ता जो लिखा नहीं जा सकता है। यह गुरूभाइयों का होता है। माँ के पेट का भाई इतना गहरा रिश्ता नहीं जो गुरू भाइयों का गहरा रिश्ता होता है। क्योंकि ये भाई आज चले जायेंगे तो अलग-अलग कहां जायेंगे। कोई पशु बनेगा, पक्षी बनेगा, कीड़ा बनेगा। कोई नरकों में जायेगा। कोई वहां जायेगा। लेकिन यह सब गुरूभाई मालिक के दरवाजे पर बैठ करके नाम के साथ अपनी जीवात्मा को जोड़ कर अपने घर जाने का सब एक काम कर रहे। तो अन्त में सबके सब उसी घर में पहुँचेंगे। इसलिये यह हैं सच्चे भाई। जो गुरु भाई होते हैं। वह सच्चे भाई होते हैं। और जो आप के भाई होते हैं वह होते हैं मानवता भाई। प्रेम उनमें होना चाहिए। लेकिन अब उनको भी प्रेम भाई भाई से नहीं रहा। पर गुरुभाईयों से बहुत प्रेम। भाई का प्रेम टूट जाय लेकिन गुरुभाईयों का प्रेम नहीं टूटता. और न टूटना चाहिए। ऐसा प्रेम आपका होना चाहिए इसको कहते हैं परमार्थी प्रेम।

भाई भाई में भी प्रेम होना चाहिये।

भाई-भाई में भी लड़ाई नहीं होना चाहिए एक कमाओ दस खाओ। दो भाई, चार भाई खाओ अपने अपने भाग्य से सब खाओगे वह थोड़ा यह भी काम करेंगे। थोड़ा हाथ हिलाएंगे उनको भी उतना ही मिलेगा उतना ही आपको। लेकिन आपको मान्यता। उनको आप मान्यता दें। आप हमारे भाई हो हमारे लिए काम करते हो मेहनत करते हो। तो उसका हृदय भी प्रसन्न रहेगा और आप भी सुखी और वह भी सुखी। लेकिन काम काज मेहनत करते हुए आप कहो कि आप ने कुछ भी नहीं किया तो आप भी दुखी वह भी दुखी। तो एक कोख के भाई उनका परस्पर प्रेम इस प्रकार का होना चाहिए कि हम एक मां के गढ़े से एक बूँद से तैयार हुए हैं।

यहां तो कुनबा जोड़ा गया है

यह तो मानवता का बहुत बड़ा सम्बन्ध होना। लेकिन ये ईंट कहीं का रोड़ा और भानमती ने कुनबा जोड़ा। कहीं के तुम कहीं के ये। कोई किसी का। कोई हिन्दू कोई मुसलमान कोई इसाई और सब आकर एक कड़ी में बांध दिए गए माला में और उनका इतना प्रेम, इतनी मुहब्बत और इतनी एकता, इतनी सेवा। इन गुणों को भी यदि भाई-भाई लें लें तो धर्म और समाज बन जाय. लेकिन यह भी नहीं सीखते हो। देखकर कि देखो यह सब के सब आये हैं। कहां कहां के रहने वाले? ब्राह्मण हैं, क्षत्रिय हैं, छोटे हैं, बड़े हैं। अनपढ़ हैं, पढ़े लिखे हैं। डाक्टर हैं, कलक्टर हैं। ये हैं, वो हैं। किसान

, हैं, सबके सब हैं आए।

आपको इनसे सीख लेनी चाहिये

एक जगह बैठे हुए प्रेम के साथ। बच्चे हैं, बच्चियां हैं, छोटे बच्चे हैं, बड़े बच्चे हैं। यह भी बात अगर आप समझ लें तो कम के कम आप को समझ में आ जाय। लेकिन यह भी आप दृष्टिगोचर अपनी बुद्धि से काम नहीं ले पाते हो। आंख पहचान नहीं पाती हैं कान सुन नहीं पाते हैं ऐसा बन्द कर रखा है।

सब एक साथ बैठे हुये हैं

तो यह भी आप देखिए कि किस तरह का एक शुद्ध पवित्र समाज। सबको एक जगह लाकर के बैठाल दिया। यह काम क्या कम देश के लिए, समाज के लिए और मानव के लिए। क्या ये हिन्दू मुसलमानों के लिए ईसाइयों के लिए गलत काम हैं। यह तो जो कोई नहीं कर पाता वह काम आपके सामने आया। बौद्ध ने यह कहा। ईसा मसीह ने कहा, मुहम्मद ने कहा। राम ने कहा, कृष्ण ने कहा। और ऐसे कलियुग में जब वह समय इतना खराब नहीं था जब कि अब इस समय पर खराब है उसमें यह घटना आपको, दृश्य दिखाई देते हैं तब भी आप नहीं समझते हो तो क्या समझें?

सतयुग का ढिंढोरा पीटना है

तो सतसंग तो जारी कर दो। गांव-गांव में खबर पहुँचा दो सतयुग के आने की। सतयुग आयेगा। हमें इसमें कोई मतलब नहीं सतयुग आना है। यह ढिंढोरा तुमको हमको दोनों को पीटना है। इसमें शर्म करने की कोई बात नहीं है। लोग मुझसे क्या कहेंगे कुछ नहीं। ऐसे-ऐसे क्षत्री और ब्राह्मण अब खड़े हो गए। उन्होंने अपनी हांडी को फोड़ दिया जिसमें मांस पकाते थे। आज से कभी यह नहीं होगा। न हमारे बच्चे करेंगे न हमारी बच्चियां करेंगी। हमको जो बताइये हम करने को तैयार हैं। हमने तो कहा तुमको तो करना था ही। हम सब का कहते हैं। तुम अपनी जगह पर आ जाओ। अपना काम सम्भाल लो बड़ी खुशी की बात है। हमारा भी काम हल्का हो जाय।

सबसे कह रहा हूं।

ब्राह्मणों से यों कहा। औरों से यों कहा। सबको कह रहा हूँ सबको बता रहा हूं। लेकिन अब चेतना आई। अब कोई बात नहीं है अब चेतना आई।

मुसलमान भी अब समझने लगे

तो क्षत्री, ब्राह्मण, हिन्दू, मुसलमान ईसाई। मुसलमानों में भी अब कुछ कुछ आ रहा। नहीं तो मुसलमान इस बात को समझ लें कि खुदा का जब डंडा बजेगा तो बड़े बड़े मुसलमान। यहां जब उसका डंडा लगेगा, इस दिल पर, तो धड़ाक से जमीन पर यह जिस्म गिरेगा। और सारी अकल आ जायगी। तब कहोगे कि ठीक लिखा था कि खुदा का पैगाम लेकर फकीर उतरेगा। तब समझ में आ जायगा अभी तो समझते नहीं हो।

जायके में फंसे हो तो वहीं कांटा बनेगा

अभी तो जायके में फंस पड़े हुये हो। और यह जायका ऐसा कांटा बनेगा कि एक-एक लोहू के कतरे को यह ऐसी खटक यानी जान सुखाने वाली यह कांटे की घटना हो जायगी। कि आपको तो यह बात मालूम नहीं। फिर कहोगे कि खुदा रहमान थे, खुदा रहमान थे मुहम्मद रहमान थे। मुहम्मद में इखलाख था मुहम्मद में ईमान था। मुहम्मद इसलिए आए थे। नेक काम को बताने के लिए। बुराई से हटाने के लिए। तब फिर यह कहोगे कि अब यह तो मुहम्मद के अच्छे काम थे खुदा के। और अभी जब कहता हूँ तो अभी कुछ मानते नहीं ईसाई और मुसलमान और हिन्दू, सतयुग

आयेगा। ढिंढोरा उसका शुरु हो गया है। दीवालों पर लिख डालो हिन्दू, मुसलमानों कभी मत मिटाना। मुसलमान, हिन्दू, इसाई अपने मस्जिद, गिरजाघर और मन्दिर पर लिखाओ कि जयगुरुदेव। नीचे भगवान खुदा और God का नाम।

सतयुग आने पर एक बीघा में १०० मन गेहूँ होगा

बाबा जी ने कहा सतयुग आयेगा। एक बीघा खेत में सौ मन गेहूँ लायेगा। हिन्दू, मुसलमान, इसाई सबको भोजन, सबको कपड़ा सबको मकान मिलगा। धन-धान्य से आयेगा। कुछ वर्षों में यह ढिंढोरा पूरा हो जायगा।

अगर जयगुरुदेव नाम मिटाया तो

अगर तुमने जयगुरुदेव नाम को मिटाया तो पहले तो यह सजा आप को। भूल से आपने जो मिटाया था वह तो प्रार्थना नहीं की थी। तो फिर देवताओं ने प्रस्ताव पास कर दिया अहमदाबाद में कि अबकी मिटायेंगे तब बताऊंगा। हमने उनसे कोई प्रार्थना नहीं की कि आप सजा दीजिए। इन्होंने मिटा दिया। अगर हम प्रार्थना करते तब तो फिर बात ही अलग हो जाती। हमने कोई प्रार्थना नहीं की। उसको सजा देने की। लेकिन देवताओं को जब भोजन कराया गया तो उन्होंने यह कानून पास कर दिया और सब के सब कानून फाइल बनाकर रख दिए। अब यह उनका काम है मैं कुछ नहीं जानता। इतना जरुर है कि मिटाना नहीं। जिस दीवार पर पुताई करो। उसको पोत दो फिर उसके बाद लिख दो तो वह मिटा हुआ नहीं समझा जायगा। उसमें कोई आप को दोष नहीं लगेगा। दीवाल, को लीप दीजिए, पोत दीजिए। मरम्मत कर दीजिए फिर लिख दीजिए। आप को कोई दोष नहीं लगेगा। इस में कोई घबराने की बात नहीं। लेकिन जानबूझ करके, शरारत में, आप मिटाओगे तो फिर आप जानें और वह जानें। हम कुछ नहीं जानते हम तो बताने वाले आप को हैं। सावधान और सचेत कर देंगे।

रिश्तेदार के रिश्तेदार को भी बता दो

रिश्तेदार के रिश्तेदार, रिश्तेदार के रिश्तेदार उनको बता दो। खत्री ब्राह्मणों ये वो हिन्दू, मुसलमान, ईसाईयों। कलियुग में सतयुग आयेगा। सब लोग तैयार हो जाओ स्वागत के लिए।

बम भोले बाबा वहां रेती में रहेंगे

और काशी जी में ग्यारह दिनों तक सतयुग की स्वागत तैयारियों में काशी विश्वनाथ बम भोले, रहेंगे उस रेती में। उल्टा सीधा डमरू बजायेंगे। अभी तो छः महीने से ज्यादा है इसलिए नहीं बताऊंगा। और उल्टा सीधा नाच करेंगे या नहीं यह बाद में बताऊंगा। लेकिन जब उनकी उल्टी सीधी डमरू और नाच उल्टा सीधा होता है तो आपको यह समझ लेना चाहिए कि कुछ न कुछ होगा। यह मैं आपको अभी कुछ बताने वाला नहीं।

❀ ❀ ❀

वहां पर यज्ञ होगा वह पूरा विधि विधान सहित वेद विद्वानों द्वारा सब कार्यक्रम विधान से। अविधान से कोई कार्यक्रम नहीं। सब निश्चित विधान से। आपके समक्ष दो करोड़ नर-नारियों से ऊपर उपस्थित होंगे। उसको आप वहां जा करके गिनना। जब तुम्हारी गिनती में न आये तो मैं आपको कुछ ही दिन पहले बतला दूंगा।

कितने आदमी हैं इसका अनुमान करो

वैसे आप गिन लेना। चारो नाकों पर खड़े हो जाना। आप जैसे अन्दाज लगाते हो वैसे मैं जानता हूं। इधर कितना बच्चा और टेन्ट हैं। लेकिन पैदल जो आयेंगे उनका तो हिसाब

आपके पास कोई है नहीं।

अकबर ने बीरबल से पूछा

दिल्ली में अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कितने आदमी हैं?

कहा कि सरकार नौ हजार नौ सौ निन्यानवे।

तुमने यह कैसे जाना कि नौ हजार नौ सौ निन्यानवे।

अरे सरकार कुछ आयेंगे कुछ जायेंगे नौ हजार नौ सौ निन्यानबे ही रहेंगे।

कहने लगे इतने चले आ रहे।

तो बीरबल ने कहा इतने चले भी जा रहे लेकिन रहेंगे नौ हजार नौ सौ निन्यानबे।

टिकट से हिसाब नहीं लगता

इसको आप हिसाब तो नहीं टिकट से जोड़ते हो। टिकट से जोड़ने से कुछ काम बनेगा नहीं। यह तो जब मैं मैदान में कहूँगा तब समझ में आएगी। बाबा जी का आंकड़ा बिल्कुल सीधा-साधा। और जब समझा देंगे तो आप की समझ में आ जायेगा।

काशी की तैयारी करो

तो काशी चलो, काशी चलो, काशी चलो। विश्वनाथ भोले बाबा की पुकार हो गयी कि काशी आओ। काशी चलो। काशी आओ, काशी चलो। जल्दी मुक्ति-मुक्त बटेगी ले लो। सतयुग की स्वागत तैयारियों का हिस्सा लेकर आओ। और भागीदार बन करके आओ। ताकि जल्दी से जल्दी जो काम हो पूरा हो जाय। बोलो जयगुरुदेव।

(सब लोग बोले जयगुरुदेव)

❀ ❀ ❀

बीस हजार बांस से अनुमान करें।

देखो मेरी बात सुनो। ये जो बल्लियां लगी हैं ऐसे लम्बे-लम्बे बांस काशी में बीस हजार लगेंगे। लगभग ऐसे बांस बीस हजार लगेंगे बीस हजार। रात को सोचना लम्बे-लम्बे बांस क्यों होंगे? उसको मैदान में देखना। बीस हजार लगेंगे बीस हजार ये तो बीस हजार बांसों की छोटी घटना आपको सुना रहा हूं। ये आएंगे कैसे बीस हजार बांस। यह तो मैदान में देखना। तो आपको पता चल जायेगा कि बीस हजार बांस। बीस हजार बांस होते हैं। बीस हजार बांस लम्बे-लम्बे वह काम देंगे काशी में और क्या होगा। यह तो आपने अनुमान लगा ही लिया है अहमदाबाद में। जयगुरूदेव।

(सबने कहा जयगुरुदेव)

❀ ❀ ❀

सभी धर्माचार्य भी आयें सबका दायित्व है

मैं अपने देश भक्तों से भी आने का निमन्त्रण हर प्रान्तों में लोगों को दूंगा। और धर्माचार्य, धार्मिक संस्थाओं के आचार्यों को भी निमन्त्रण दूँगा। यह आपका भी काम है आप पधारें। केवल मेरा ही काम नहीं। यह आपका भी काम। जिम्मेदारी आपकी भी है। भारत में आपके ऊपर भी दायित्व का बोझ लदा हुआ है। उसे भी आप को पूरा करना है। मैं धार्मिक संस्थाओं के आचार्यों को भी निमन्त्रण दूंगा। और बड़े-बड़े देश भक्तों को भी आमन्त्रित करूंगा। आना न आना उनके ऊपर निर्भर। मैंने अहमदाबाद में भी लोगों को निमन्त्रण दिया। लेकिन लोगों ने भूल से जब उस निमंत्रण को जब स्वीकार किया जब अपनी आंखों से ऐसा अहमदाबाद का कार्यक्रम देखा। उस समय उन्होंने मुझसे कहा कि हम लोग आना चाहते हैं। तो हमने आपको पहले से ही निमन्त्रण देकर बुलाया। और पहले से निमन्त्रण देकर बुलाऊंगा।

सभी को निमन्त्रण देकर बुलाऊंगा

इसलिए देश भक्त, समाजसेवी, धर्माचार्य

धार्मिक संस्थाओं के लोग, विद्वान मैं सभी लोगों को सम्भवतः यथाशक्ति जितना हमसे हो सकता है वह जानकारी सम्मान पूर्ण उसे दूंगा और सम्मान के साथ बुलाने की भरसक अन्दर और बाहर से चेष्टा करूँगा। और उनसे यह कहूँगा कि आपको का काशी-विश्वनाथ बमभोले ने बुलाया है। हमारे निमन्त्रण पर नहीं बल्कि बमभोले के निमन्त्रण पर अवश्य ही पधारें। क्योंकि आप को उस देवता का सम्मान करना हो चाहिए, जिसकी भारत में एक विशेष स्थान और एक विशेष पूजा पद्धति भारत में है। उस देवता का सम्मान हम लोगों को जब ग्यारह दिनों तक रेतो में रहेंगे तो हमको भी वहां उपस्थित होना चाहिए। इसलिए मैं जब छः महीने रह जायेगे तो मैं जो-जो निमंत्रण जिन जिन संस्थाओं को देता जाऊंगा उन-उन संस्थाओं के सम्बन्ध में आप को बतलाता जाऊँगा बाकि सभी लोगों को यह मालुम हो जायेगा कि बाबा जी के मस्तिष्क में किसी भी संस्था के प्रति अभाव नहीं है। बल्कि सब मानव संस्थाओं के प्रति श्रद्धा है।

मैं किसी से बैर भाव की बात ही नहीं करता

अभी कुछ लोग ऐसा समझते होंगे कि बाबा जी हिन्दू मुसलमान या अन्य संस्थाओं से वैर भाव रखते होंगे या रखने की कोई ऐसी शिक्षा देते होंगे। यह उनको बता दिया जायेगा और आप अपनी संस्थाओं के लोगों से पूछ लेगे कि उनका निमंत्रण मिला की नहीं। और काशी में आकर सबके साथ एक भाव से सम्मान और सत्कार किया जायेगा। किसी के साथ कोई भेद-भाव वाली बात नहीं। चाहे ईसाई आओ चाहे मुसलमान आओ चाहे हिन्दू आओ। कोई भी आ जाओ। इन तीनों के मध्यस्थ में अन्य जितनी भी संस्थाऐं हैं उनको भी निमंत्रण मिल जायेगा। मेरी दृष्टि में कोई ऐसी बात नहीं है। मेरे काम में।

बाबा जी कुछ नहीं

लेकिन लोगों को। मुझको लोगों ने ऐसा पहले से समझा था। और उन्होंने यह कह रखा था कि बाबा जी यह हैं। तो बाबा जी कुछ नहीं यह उसमें इस पर्चे में लिखा हुआ है। उसको जरा ध्यान से सुनें।

एक सज्जन ने गिरा बटुआ दिया

यह किसी का एक बटुआ गिरा है जिसमें कुछ पैसे भी हैं लेकिन यह किसी को मिला है उसने लिखा क्या है यह देखिए आप। बटुआ की तो कोई बात नहीं है। कहां गिरा कहां मिला। यह तो वह जाने लेकिन बात उसकी सुनिये।

पत्र की बात

जयगुरुदेव, सतयुग आयेगा। उसने क्या लिखा है। जयगुरुदेव, सतयुग आयेगा। और उसके आने का क्या परिचय दे रहे हैं? यह बटुआ और जिसमें इतने इतने रूपये। मैं शाम को रात में दस बजे पाया तम्बू के पास। इसको जिसका हो उसे दीजिएगा। यह सतयुग आएगा। कहने का मतलब यह है कि बटुआ, घड़ी, चैन, जंजीर जो गिर जायेगी वह पहुंचा दी जायेगी। इसका मतलब सतयुग आयेगा।

❀ ❀ ❀

जो पाते हैं सब दे जाते हैं

जो चाहें गिरी मिलती है लोग डाल जाते हैं। ये घड़ी-जंजीर कुछ यह वह चीजें मिलीं। वह कुछ पायल यह वह आने लगीं। ये बच्चे आदि पढ़ते हैं तो डाल जाते हैं कि यह वहां गिरी थी। यह बच्चों में सतयुग के आने का भाव का प्रदर्शन है। उसमें लिखा है कि यह दे दीजिएगा सतयुग आयेगा। यानी देखिए आप जोरदार शब्दों का [illegible] इसका जिसका हो दे दीजियेगा सतयुग आएगा। एक आत्मा will power आत्मशक्ति को जगा लिया जाये। एक

Scanned with CamScanner

आदमी की will power शक्ति को जाने पर क्या नहीं हो सकता है। और भारत के कितने लोग आत्म शक्ति और will power को जगा रहे। यह आप ने कभी सोचा। मेरी बात तो आप छोड़ दीजिये।

ऐसी-ऐसी चीजें। अहमदाबाद में कितनी कितनी चीजें लोगों को मिली लोगों ने पहुँचा दी। यह सब घटनायें आप लोगों के सामने आने लगीं।

क्षत्री लोगों से प्रार्थना

आप देखो क्षत्रियों शराब पीना, मांस खाना बन्द करो। और गांव-गांव में लाठी लेकर सड़कों पर दौड़ो कि हमने बहुत शराब पीया मांस खाया लेकिन इस हद से इस समय से अब कोई चोरी कोई डकैती नहीं हो सकती। कोई कतल नहीं हो सकता। अब यह तुम काम करो और दिखा दो काम को कि मेरे हलके में इस भेड़े से उस भेड़े तक कोई आदमी रात को दिन को सुबह शाम बच्चा बच्ची देवी चली जाय तो यहां कोई घटना नहीं होगी। ऐसा काम करो। यह काम करना है तुम्हारा। अगर खून को तुम शुद्ध करना चाहते हो। तो जल्दी करो देर मत करो। नहीं तो तुम्हें कलंक लग जायेगा। क्षत्रिय नो कोई और बन जायेंगे। तुमको कलंक लग जायेगा। और तुम्हारा खून न मालूम क्या हो जायेगा। इसलिए अपने खून को बरकरार रक्खो। जो उसमें गंदगी आ गयी है न उसका संशोधन करा लो, शुद्धि करा लो। और अपनी जगह पर आ जाओ। हम तो यह चाहते हैं।

रीवां में अभी गया था

अभी आप रीवां में जाइये। एक घर यहां, एक घर खेत पर। एक घर वहाँ, एक घर वहां। एक साथ आप को हजारों घर अलग अलग दिखायी देंगे। जब उनसे पूछा कि अलग-अलग घर हैं। यहां चोरी डकैती।

कहने लगे यहां चोरी डकैती नहीं होती। अभी यह पास ही में रीवां में ऐसा हुआ। राजाओं के राज्य में इस प्रकार की व्यवस्था थी वह आज भी चली आ रही कि चोरी डकैती नहीं निर्विघ्न बच्चे रात को सोते हैं। कई एक घरों में तो मैंने दरवाजा नहीं देखा बांस की टटिया देखी। और घर में गये तो सब सामान रखा हुआ। मैंने कहा चोरी।

कहने लगे यहां चोरी नहीं होती।

वह देखिये आप। और आप उत्तर प्रदेश में क्या कर रहे हो। इसको भी आप को सोचना चाहिए।

अपनी-अपनी जगह पर आओ। जो चीज पवित्र होनी है उसको करा लो। जल्दी से जल्दी। और अपनी मान्यता, अपनी मर्यादा अपनी जगह पर याद रहे। काम करो। देखो आप किस तरह से पूजे जाते हो। लोग कैसे पूजते थे। यह भी देखने की बात है आपको। इसलिये गुरुपूर्णिमा का यह शुभ अवसर है, महान अवसर। आज का सतसंग। कल का सतसंग हो गया।

झण्डा का लाल अक्षर

श्रद्धा-प्रेम के साथ गांव में यहाँ से ढिढोरा पीटते हुए अपने-अपने झण्डों को नर-नारी साथ में लाएगें। उस पर लाल स्याही से।

लाली देखन मैं गयी
मैं भी हो गयी लाल।

वह लाल स्याही जो सफेदी पर आयी है वह वहां की है।

लाली देखन मैं गयी
मैं भी हो गयी लाल।

हनुमान जी ने जब सूरज निगल लिया। तो लाल हो गये। और कहीं वाल्मिकि ने जब

Scanned with CamScanner

दर्शन किया उस लाल ब्रह्म का तो वह भी लाल हो गये।

तो यह लाल जो चिन्ह आया है वह कहीं बाहर का नहीं। उस झण्डे को साथ लेकर आना, खाली कोई नहीं आयेगा। इतना झण्डा हो, इतना हो, इतना हो। झण्डे को साथ लेकर।

बच्चे झण्डा लेकर सड़क पर खड़े

अभी मैं इलाहाबाद से आ रहा था। एक बच्चा उधर एक बच्चा इधर। दो बच्चे। उनको मालूम नहीं था कि इधर से बाबा जी गुजरेंगे। ऐसे झण्डा करके दो, एक लड़की एक लड़का। पांच-पांच वर्ष के ऐसे करके एक सड़क पर खड़े थे। ऐसे। लेकिन कायदा-कानून देखिये। पचास वर्ष के नीचे पैर उधर भी इधर भी और ऐसे झण्डा। जब देखा कि आगे जयगुरुदेव तो गाड़ी खड़ी कर दी। तमाम लोग घरों में बैठे हुए थे। सब दौड़े पड़े और चारो तरफ से गाड़ी को घेरी और बस लग गये वह तो उनका काम ही है। घेर लिया और पैर छूना और ये करना और ये मारना। और सिजदा करना और ऐसा करना। यह सब शुरू कर दिया।

बच्चों के भाव

तो देखिये उस झण्डे का कि बच्चे। उन बच्चों के अन्दर कितना बड़ा भाव कि किस तरह से खड़े हुए हैं।

झण्डा लेकर आना

तो झण्डा लेकर आना। उस पर जयगुरुदेव लिखा रहेगा। वह साथ कपड़ों के रख कर ले आना। काशी में आओ। इसमें संकोच करने की कोई बात नहीं। हिन्दुस्तान का सबसे बड़ा तीर्थ काशी वैसे भी और वहां पर कितने लाख आदमी। बिहार के आयेंगे वह देखने को आपको मिलेगा। उनकी भाषा ही अलग है। मैं अभी १७ तारीख से २८ तक सत्तार हजार लोगों को अभी नामदान देकर आया हूं। अभी-अभी पिछले महीने में ही और वहां पर इतनी जबरदस्त तैयारी काशी में चलने की अभी से और गांव-गांव की दीवारों पर और जिसमें अनाज रखे हैं सब पर लिख दिया गया। वह देखकर के लोगों में क्या होता है और क्या नहीं उतर के आयेगा।

फकीरों ने कहा कि खुदा भी चले आयेंगे

खुदा भी मैखाने में चले आयेंगे। उतर कर। यह फकीरों ने कहा है। यह दिल की सराय है। जब दिल सराय साफ कर ली जायेगी। तो खुदा भी इस सराय के मैखाने में चले आयेंगे। और हमको आकर के अपना दीदार देंगे।

हमारा दिल जब इस तरह का हो जायेगा तो—

एक मन लाखों तमन्ना,
इस पर भी भारी हविश।

फिर कहां है ठिकाना उसके बैठाने के लिये।

एक मन और लाखों इच्छायें-तमन्नायें हो। अरे लाखों तमन्ना इच्छा तो खतम करो। एक दिल को, एक मन को सामने करो। वह आ जायेंगे उनको आने-जाने में क्या देर लगती है। न जाने में देर न आने में देर। तुमको अपनी सराय की तैयारी करनी है।

गु नाम अन्धकार का और रु नाम प्रकाश का है

इसलिए यह गुरुपूर्णिमा है। गु नाम अन्धकार का, रु नाम प्रकाश का। मनुष्य रूपी मकान पर दरवाजे पर बैठ जाओ और गु को छोड़ दो और रु को पा लो। इतना ही काम करना है सीधा-साधा। गुरुपूर्णिमा। सौभाग्य सौभाग्य से ये आपके दिन अच्छे रहे।

Scanned with CamScanner

मालिक की दया है

हम यह चाहते हैं कि सबने दर्शन दिया है हम बराबर आप को सबको याद करते रहेंगे। आपको हम भूलेंगे नहीं। और गुरु महराज, स्वामी जी, मालिक की यह कृपा है। वह ऐसी मंजिल पर बैठकर के खूब आपको देखते हैं। जंगल में जाओ घर में जाओ, खेत में जाओ। चलते हुए जाओ, ट्रेन में जाओ, बस में जाओ हवाई जहाज में जाओ लेकिन वहां उन्होंने Controling Power यानी इन्तजाम बन्दोबस्त वहां से उन्होंने लगा करके कर रखा। वह वहां से साफ धीरे से बैठकर अपना काम कर रहे। इसलिए कोई चिन्ता की बात नहीं। जो वहां बैठ करके सब इन्तजाम वह कर रहा है प्रेमी भक्तों के लिए। उसको कभी भी किसी समय पर भी चले जाओ कोई चिन्ता की बात नहीं।

भूत प्रेत आदि ६० प्रतिशत दूर हो गये

अहमदाबाद की विभिन्न प्रकार की घटनाएं लोगों के सामने सुनने को आई। और वह जो घटनाएं सुनी वह सब गलत। हमको उन घटनाओं को बताने की जरूरत नहीं। और जितने भी भूत, प्रेत, पिशाच आदि जिन लोगों के ऊपर सवार हैं वह काशी में आ जाओ। आत्माएं वह भी हैं लेकिन बहुत नब्बे फीसदी तो छोड़ जायेंगी और दस फीसदी यदा कदा कभी समय देकर के और आयेंगी क्योंकि मुहब्बत प्यार उनका बहुत दिनों से हो गया और थोड़े दिन के बाद वह भी छोड़ जायेंगी।

भूत प्रेत क्यों लगते हैं क्योंकि आप ने उन्हे सताया

यह सब प्रेत आत्माएं, भूत आत्माएं अनेक प्रकार की। क्यों इन्सान आदमियों को लग जाती हैं क्योंकि आपने उनको सताया। बदला लेने के लिए आपके पास आ जाती हैं कि हमारा बदला दे दो। आपको तो मालूम कुछ है नहीं। और फिर वह बदला देती हैं। कभी लड़के पर, कभी लड़की पर, कभी स्त्री पर, कभी आदमी पर। अपना बदला मांगती है। आपके किए कर्मों का। कर्मों किया है उसका।

आप तो यह सब जानते नहीं हो और फिर कुछ मालूम नहीं। दर-ब-दर भटकते फिरते हो।

प्रेत आत्माओं को भी दूर करने का प्रबन्ध है

तो प्रेत आत्माओं को दूर करने का भी बड़ा भारी प्रबन्ध। और देखना वहां पर किसी की टांग ऊपर किसी की नीचे। और चिल्लाएगा और यह करेगा वह करेगा। कहेगा हम जा रहे अब नहीं आएंगे। हम जयगुरुदेव बोलेंगे हम भी कल्याण के लिए आए हैं। और हम भी अब जयगुरुदेव नाम जायेंगे। हमको छोड़िए मत और नहीं मानेंगे तो अब हम नहीं आएंगे हमारे ऊपर भी कृपा करिये आप।

भूत भी जयगुरुदेव बोलेंगे

तो कब्रिस्तान से भूत भी निकल कर जयगुरुदेव बोलेंगे। अरे आप तो आदमी हो। यह जयगुरुदेव नाम ऐसा है कि भूत और पिशाच भी खड़े होकर के बोलेंगे। यह ऐसा वैसा नाम नहीं है। आदमी और जानवर का नाम नहीं है। उसका नाम है। उस अखण्डता का। इसलिए आप को शंका नहीं करना। बोलो जयगुरुदेव। (सब लोग जयगुरुदेव बोले)।

❀ ❀ ❀

इमर्जेन्सी में आप को बहुत कष्ट मिला मगर श्राप न देना

हमारे प्रेमी। हमने जब दौरा देहातों का किया है तो जानकारी हुई। बहुत से प्रेमियों

को इमरजेंन्सी में बहुत पीटा गया। देवियों को भी बहुत मारा गया। मैं उन देवियों से और भक्तों, प्रेमियों से प्रार्थना करूंगा कि आप अपनी भावना उनको श्राप देने की न बनाएं। कोई भावना ऐसी मत बनाएं कि उनको श्राप मिले क्यों कि भजन का प्रताप अद्भुत होता है। आप को मालुम नहीं। उन लोगों को भी भविष्य में यह चाहिए कि यह आप की माताएं और बच्चियां हैं और यह आपके भाई और बच्चे हैं। किसी को निर्दोष पीटना नहीं चाहिए। उनसे भी मैं अनुरोध करता हूँ कि वह अपनी बुद्धि को खेद्बुद्धि बनाएं। भविष्य में कोई ऐसी घटना न करें। कसूर करने वाले को सजा दें। लेकिन उसमें भी दया रखनी चाहिए। लेकिन जो निर्दोष हो उसको तो बिलकुल ही दूर रखें। निर्दोष लोगों को सताओगे तो यह बड़ा भारी दाग लग जायेगा। और फिर भोगना पड़ेगा।

हमने भी कष्ट सहा

तो हमको जब देवी और बच्चों ने बताया तो एकदम से अकुलाहट सी अन्दर में हुई। पहले यह घटना बाहर हुई हम तो जेल में थे। हालांकि हम वहां भी देख रहे थे। इसमें कोई सन्देह वाली बात नहीं। और वहां भी देख रहे थे और वहां भी जो कुछ हो रहा था हो रहा था। लेकिन जब प्रत्यक्ष में यह समझकर के ये कहते हैं कि महाराज जी को मैं अपनी तकलीफ बता दूँ।

जुल्म और जालिम ज्यादा दिन नहीं टिकते

तो इसमें कोई सन्देह नहीं है कि बहुत ही तीक्ष्ण और अशोभनीय घटनाएं सुनने और समझने को मिलीं। ऐसे देश में जुल्म और जालिम जब पैदा हो जाते हैं तो ज्यादा दिन नहीं टिकते हैं। इस रियाया पर रहम करो।

३० साल में बस यही हुआ कि गरीबी दूर कर देंगे

३० साल में आपने केवल एक मात्र यही काम किया कि हम लोगों को रोटी देंगे और आप ३० साल में रोटी नहीं दे सके। लेकिन रोटी से भूख। रोटी न पाकर भूख से मरने की एक साल के अन्दर कोई शिकायत नहीं। जब से अयोध्या के देवता प्रसन्न कर लिए गए तब से भारत में अनाज की कोई शिकायत नहीं। आपके खेतों में हर प्रकार का अनाज शरीर की रक्षा के लिए होने लगा। जो नहीं हुआ वह होने लगेगा। और एक साल के अन्दर कोई भूख से मरने की घटना नहीं। पानी में डूब जाओ और कोई घटना हो जाय। बात थोड़ी देर के लिए अलग है। लेकिन अनाज भारत में इफरात।

इस एक साल में कोई भूख से नहीं मरा

जालिम और जुल्मी हमेशा यह कहते रहे कि भूख से मर गए। मार डालो सबको। खतम कर दो सबको पदा मत होने दो। बच्चों को मार दो। पेट ही में मार दो। ये सब घटनाएं सुनने को आपको मिलती थी। लेकिन अब कोई घटना नहीं।

अब तो अनाज भरपूर पैदा हो गया है

और यह बताया जा रहा कि अहमदाबाद के यज्ञ के बाद छः महीने पहले जो बताया कि भारत में इतना अनाज पैदा होगा जो पचास वर्षों में नहीं हुआ। वह इस साल में पैदा हो गया। जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश यह पांच देवता प्रसन्न करने को और रह गए। और कुछ और बातें गोपनीय रह गई। इनको भी प्रसन्न कर लेने दीजिए। आप चिन्ता क्यों करते हो।

अच्छा एक बार माफ कर दो

इसलिए आप चलते चलो। होश में आओ। कोई चिन्ता मत करना। अपनी भावना ऐसी मत बनाओ कि इसको श्राप मिल जाय। एक दफे सब माफ कर दो। दुबारा कभी कोई घटना हो तो श्राप दे देना तब तक तुमको श्राप देने की क्षमता हो जायेगी। कोई बात नहीं है

Scanned with CamScanner

लेकिन एक दफे वो माफ किया ही जाता है। क्षमा करो। और हमने भी कुछ नहीं सोचा मन में कोई विकल्प विकल्प नहीं किया, कोई संकल्प नहीं किया। हम भी वैसे ही गुम-सुम बिल्कुल बने रहे। वैसे ही भक्त मण्डली और प्रेम मण्डली को देते रहे। यह जरूर है कि उन लोगों पर जो कुछ भी बीती। बाद में जब उनसे पूछा गया कि कुछ तुम्हारे साथ हुआ तो कहने लगे हमको कुछ नहीं हमको कुछ नहीं मालुम है यह भी लोगों ने बतलाया।

आगे का समय खराब है उसे काट लो

तो इसलिए मालिक हर वक्त वहां हर हालत में संभाल करता है। लोग कहने में कोई कमी। रावण और कंस न रखते हैं न रखो। लेकिन संभाल करने वाले ने संभाल की। इसलिये कोई बात नहीं है। समय जो है वह था। और अभी कुछ समय खराब और है। इसको भी थोरे से किसी तरह से पार कर दो। जब तक समय खराब रहेगा तब तक सतयुग का ढिंढोरा कुछ ही वर्षों में पीटा जा रहा। और जैसे ही समय आप का खतम होने को, खराब, हुआ तो बाबा जी ने झट आवाज बदली। आवाज बदलने में देर नहीं लगेगी। उसको समझ लीजिएगा। बोलिए-जयगुरुदेव।

(सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव)

❀ ❀ ❀

सब चाहते हैं कि कलियुग में सतयुग आये

अच्छा यह बतलाओ कि कलियुग में सतयुग आये? सबने उत्तर दिया। हां। सतयुग को चाहते हो तो हाथ उठाकर जरा दिखलाओ वो। सबने हाथ उठाया। कलयुग में सतयुग आये। सबने कहा हां।

क्या किसानों चाहते हो कि एक बीघा खेत में सौ मन गेहूं हो? सबने कहा हाँ।

हाथ नीचे कर लो

विद्वानों को सम्बोधन

मैं विद्वानों को यह बात इसलिए सुनाता हूँ अविद्वानों के सामने। ये अविद्वान जो आप बैठा देख रहे हो पानी में यह आपके लिये सबके सब अविद्वान हैं। और यह संकल्प करते हैं कि सतयुग आये। तो आप अपनी विद्धवता का कोई सामियाना आकाश में लगा देना। और यह कहना कि हम तुमको जमीन पर नहीं उतरने देंगे। अपनी बुद्धिमता में कोई कमी रखना नहीं और जब सतयुग आवे तो फिर उसके बाद क्या हो जाना। जयगुरुदेव। सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव।

❀ ❀ ❀

चीजें गायब नहीं होगी यह सतयुग का लक्षण है

ये किसी बच्चे-बच्चो का बटुआ हो तो ले ल। इसमें कुछ पैसे हैं हमने गिने तो नहीं हैं। हमनें नहीं गिने। कोई अपना बता देगा इतना है और ले जाए। यह किसी का गिर गया हो यह देखो यह। जयगुरुदेव। (सब ने कहा जय गुरुदेव)

यह किसी बच्चो का एक पायल है यह उसका गिर गया है अपना ले लेगी। जयगुरुदेव नाम किसका? परमात्मा का। जयगुरुदेव नाम किसका? परमात्मा का। जयगुरुदेव नाम किसका? परमात्मा का।

अब आप घर वापस जांय और अपना काम करें

देखो इस समय पर बारह बज कर बीस मिनट हुए। यह कार्यक्रम सर्व सम्पन्न और पूरा होने जा रहा। आज का गुरुपूर्णिमा का आपका कार्यक्रम दर्शन का। और दर्शन लेने और दर्शन देने का हो गया। छोटी-छोटी बातें सभी आपको इशारे में, संकेत में बता दी।

Scanned with CamScanner

अपने-अपने घरों में जाएंगे खेती का काम काज दुकान का, नौकरी का करेंगे। सतयुग के आने का जो विशाल ढिंढोरा आप पीट दें। हम भी पीटें आप भी पीटो।

गेरू से लिख दें

दरवाजे-दरवाजे, पेड़ पेड़ पर लिखो अपने हाथ से। काहे से लिखो। गेरू बहुत पवित्र होती है। उसी पवित्र गेरू से अपने दरवाजे पर लिखो। मैं सतयुग के आगवन का स्वागत करूंगा। सतयुग के आगवन का स्वागत करूंगा। व लिखना म नहीं लिखना व बनाना म मत बनाना। सतयुग के आगवन का स्वागत करूंगा। ऊपर जयगुरुदेव नीचे यह। और सतयुग आएगा। आप लोग थोड़ा सा योगदान और मदद करो। अपने-अपने घर। बच्चे ट्रेन से अपनी साइकिलों से। अन्य किसी सवारी से पैदल से गांव में जायें। शाम तक सब अपने अपने बच्चों को लेकर घर पर पहुँच जायें। अपनी-अपनी खेती जोतें।

परसाद को खाद के रूप में खेत में डालो

और यहां पर जो कुछ भी आपको परशाद मिला उसका थोड़ा सा कण अपनी-अपनी खेती होने के बीच में डाल दें। और उस बीज को या पौध को लगा देंगे। पौध लगा दी गयी हो तो खाद में डाल देना। नहीं खाद में डालना तो मिट्टी में मिलाकर ऐसे डाल देना खाद की तरह। जिस तरह से तुम्हारा मन चाहे उस तरह से। तुम जो यहां पर आपको मिला है उसी में जरा सा कण मिट्टी में मिला करके उस मिट्टी को खेत में डाल देना। अपने-अपने खेतों में।

प्रसाद का प्रभाव

खेतों का काम कम और लाभ ज्यादा। मेहनत तो जरूर करनी उसमें तो जरा भी कभी मत रक्खो। मेहनत थोड़ी करो लेकिन करो जरूर। और लाभ खेती का आपको दुकान का या अन्य किसी काम का मिलेगा। पढ़ो जरूर लेकिन इच्छा और लगन के साथ पढो। तो फिर क्या होगा ज्यादा ज्ञान मिलेगा। बुद्धि आपकी ज्यादा खुल जायगी। लेकिन पढ़ो भी नहीं और कुछ लाभ भी नहीं लेना चाहते हो तो कैसे होगा? पढ़ो। लेकिन लाभ ज्यादा। हर किसी को लाभ मिलेगा। हिन्दू हो मुसलमान, ईसाई हो।

गुरूपूर्णिमा का कार्यक्रम पूरा हुआ

मैंने यह कार्यक्रम आपके समक्ष गुरुपूर्णिमा का पूरा कर दिया। मैं यह चाहता हूँ कि सभी लोग २ बजे के अन्तर्गत अपने-अपने घर जाने का प्रस्थान करेंगे।

आंखों से भर कर दर्शन करो

अपनी-आपकी आंखों से देखो और हमने आपको अपनी आंखों से खूब देखा। हम भी अपनी आंखों में आपकी मूरत बसा लें और आप भी अपनी आंखों में बसा लो। इस तरह से हम आप एक दूसरे को भूलें नहीं। याद करते हुए चलते जांय। खेती में काम करो याद करते रहो। बच्चों को सेवा करो याद करते रहो। भजन करो तो याद करते रहो। हर वक्त उसकी याद का एक काम अन्दर में जारी करो। शरीर से कर्म यह करो और अन्दर से काम वह करो।

मन जाता है तो जाने दे,
दृढ़ कर राख शरीर।
उतरी पड़ी कमान से,
कबहूं न चाले तीर॥

मन जाता है चला जाने दो लेकिन शरीर रूपी कमान को रखो। यह उतरी हुई कमान

है कभी तीर नहीं चलेगा। इस तरह से कमान को चढ़ा के मत जाओ। अगर कमान को चढ़ा लिया तो तीर लग जायगा छूट जायगा। फिर आप के बस की बात नहीं रहेगी।

तो कमान को शरीर रूप उतार के रक्खे रहो। मन को जाने दो। शरीर को दृढ़ रखो। मन से कहो कि चलो तुम कहां चलते हो चलो। शरीर यहां रखे रहो। जाओ। वहां से हार करके लौट आयेगा। तब कहो कि तो फिर भजन में लग जाओ। जब ध्यान करो, सुमिरन करो भजन करने लगो। कोई प्रार्थना करने लगो खेती का काम बच्चों का काम करने लगो।

इसलिए शरीर को रोक रक्खो। उसे मत जाने दो। क्या करेगा मन। वह बगैर कमान के नहीं चल सकता है। कमान जब चढ़ेगी तब चलेगा। वैसे कुछ नहीं करेगा। वैसे तो अलग हो जायगा। जयगुरुदेव (सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव)

❀ ❀ ❀

मेरी हर बातें टेप हो रहीं और किताब भी लिखी जा रही

देखो यह टेप चल रहे। ऐसे बहुत से टेप लगे हुए हैं। और हर एक सतसंग में लोग टेप करते रहते हैं। ७० का, ७१ का, ७२ का, ७३ का, ७४ का, ७५ का वह सब टेप हैं। और इधर जो सतसंग जारी हुए हैं २३ मार्च के बाद सन् ७७ में वह भी बराबर टेप हो रहे। यह सभी वक्त जरूरत पर कभी काम आयगे। ऐसा कोई मत समझो कि टेप नहीं हो रहा। जब कभी जरूरत और समय पड़गा तो यह सब टेप आ जायगे सामने। एक आदमी नहीं टेप कर रहा। कई एक करते हैं। और इस टेप को ले जाकर वहां टेप कर लेते हैं। इस टेप को ले जाकर किताब लिख रहे हैं। कई एक किताबें लिखते चले जा रहे।

आगे ये किताबें काम देंगी

तो यह ऐसे कलाम और शब्द हैं कि भविष्य में इसकी कितने भाषाओं में किताबें बनेंगी। आपको तो कुछ मालूम है नहीं। जानते कुछ नहीं हो। इसलिए जयगुरुदेव।

(सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव)

जयगुरुदेव नाम किसका? परमात्मा का। जयगुरुदेव नाम किसका? परमात्मा का।

❀ ❀ ❀

स्पर्श के नाम पर नाखून से खून निकल गया

देखो बच्चों, यह ऐसा नोचा है कि खून निकल आया। अह ह ह। ऐसा नोचते हो कि खून निकाल देते हो। अरे भाई। शरीर है पत्थर नहीं है। इतना जोर के। नाखून काट कर आया करो। नाखून काट लिया करो, नाखून। नाखून लेकर के आते हो खून निकाल देते हो। यह शरीर है। यह इधर भी मार दिया। जयगुरुदेव। सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव।

❀ ❀ ❀

देखा हमको अगर नोचोगे तो ऐसा मजमा और भीड़ इकट्ठी करेंगे कि यह गर्दन आपकी ऊपर दब जायगी। फिर चिल्लाओगे कि फौरन बचाइये। समझ लो आप। ऐसा मजमा, ऐसी भीड़। तो हमको नोचो मत। नाखून काट कर आया करो। जब आये सतसंग में तो एक दिन पहले बनवा लिया। जैसे बाल बनवाते हो वैसे नाखून कटवाओ। जयगुरुदेव। (सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव) जयगुरुदेव नाम किसका? परमात्मा का।

❀ ❀ ❀

सभी अधिकारी गणों के प्रति आभार प्रकट किया

आप को एक बात बताएं। अरे भाई कहां

गये तिवारी। अरे भाई शिक्षा मंत्री का क्या नाम ? श्री काली चरण।

अरे यह स्थान हमारे शिक्षा मंत्री काली चरण ने लिखकर के दिया कि यह स्थान दे दिया जाय और उसके बाद डायरेक्टर ने उस पर स्वीकृति कर दी। दे दिया जाय। और हमारे प्रिन्सपल साहब ने उसको स्वीकार कर लिया तो दे दिया। और देखिए कि आप उनके तख्तों पर बैठे हुए हैं। आचार्यों के। तो आप उनके भी आभारी हैं। जो स्थान दिया है। उनका तख्त इस्तेमाल किया है। उनकी चीजें इस्तेमाल की हैं। तो उनका भी आपके ऊपर आभार। उन्होंने आपकी सेवा की। इसमें कोई सन्देह नहीं। इससे मैं इन्कार नहीं हो सकता हूं। उन्होंने भी किया, उन्होंने भी किया, इन्होंने भी किया और सबका आभार प्रगट करता हूँ कि सब लोगों ने सहयोग दिया। शहर के बच्चों ने, शहर के, नगर के नागरिकों ने नर नारियों ने भी इसमें सहयोग दिया और अधिकारियों ने भी सहयोग दिया। मैं उनका भी आभारी हूं। बड़ी शांतिपूर्ण व्यवस्था के साथ यह इतने बड़े जन-समुदाय के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हो गया। सब लोग नियन्त्रण में रहे। किसी को कोई तकलीफ नहीं। नगर के नागरिकों को, बच्चों को, बच्चियों को, अधिकारियों को अध्यापकों को कोई भी किसी भी तरह की अव्यवस्था नहीं। एक बात जरूर हो गई है कि इधर दीवाल के किनारे ही जो टट्टी पेशाब हो गई है तो वह तो अब क्या किया जाय ? मैं क्या करूं। उसके लिए तो मैं कुछ कर नहीं सकता। वह तो सफाई हो जायगी। उसके लिए तो यह है। अब यह बात तो जरूर है। जहां इतना बड़ा जन-समुदाय रहेगा आपके घर में रिश्तेदार आ जांय तो कमरे में बिस्तर पर टट्टी पेशाब कर ही देते हैं। तो बाद में सफाई हो जाती है। तो आप किसी को बुरा न नहीं मानना चाहिए। यह आपके बच्चे हैं टट्टी पेशाब कहीं न कहीं हो ही जायगी। कोई बात नहीं। इतनी बात जरूर। बाकी है सब ठीक है। जयगुरुदेव। सब प्रेम से बोलें जयगुरुदेव।

❀ ❀ ❀

इस वर्ष इतनी शादी हुई मगर सब चीजें मिलती रहीं

देखो बच्चे, बच्चियों देखो सुनो। ऐ कोई बोलो नहीं। जबान बन्द करो। देखो बच्चे बच्चियों अबकी साल इतनी शादी हुई है कि पचास सालों की शादी जोड़ ली जाय तो इतनी शादियां हुईं। लेकिन यह आपको मानना पड़ेगा कि किसी चीज की शादियों में कोई कमी बाजारों में नहीं।

सरकार को आभार प्रदर्शित करो

दिल्ली के लोगों ने लखनऊ के लोगों ने बहुत इन्तजाम किया है। और इसके लिए भारत की जनता यानी आभार प्रगट करती है कि शादियों में बजारों में, गांवों में किसी चीज की कोई कमी नहीं। जबकि हर साल आए दिन, हर चीजों की बाजारों में कमी होती थी यह कमी नहीं होने दिया। तो आप लोगों को कुछ न कुछ किसी के किए हुए काम पर एहसान मानना भी चाहिए। जयगुरुदेव।

(सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव।)

❀ ❀ ❀

लोगों की गरीबी दो चार किलो अनाज से नहीं जायेगी। एक बीघा में १०० मन अनाज पैदा होगा तब गरीबी दूर होगी

अरे नर नारी, दो किलो, चार किलो अरे दे करके तुम्हारा कोई क्या पेट भरेगा। बाबा जी ने तो देवताओं से ऐसी प्रार्थना की

है कि काम खेतों में कम करो। और एक बीघा खेत में सौ मन गेहूं। और चार बीघे खेत में चार सौ मन। पचास मन खाओगे। साढ़े तीन सौ मन हर किसान के घर में रखा रहेगा। साल में पचास मन खाने के बाद। सारे हिन्दुस्तान के किसानों की गरीबी इस तरह से दूर हो जायगी। क्या कोई दो कीलो चार कीलो और देकर हमारा पेट भर लेगा? क्या हमारी कोई गरीबी दूर करेगा? हमारी गरीबी दूर करेगा हमारा काम और भगवान की दया। क्या कोई गरीबी दूर करेगा। ऐसी अवाजें एक साल के पहले बहुत लगती रहीं। हम गरीबों के रहनुमा हैं। हम गरीबों के मुशाहिरा हैं। लेकिन कहीं कुछ नाम नहीं। चिल्लाते रह गए और अब यह आ गया कि पश्चिमी जिले में चले जाओ तो किसानों के खेतों में जंगल की तरह से गन्ना खड़ा है। बरसात में चार महीने कारखाने और चलते रहे चौबीसों घण्टे। मगर गन्ना खतम नहीं हुआ। यह उस परमात्मा की दया हुई। यज्ञ में देवता प्रसन्न कर लिए गये। उसी का फल है। जयगुरुदेव। सब प्रेम से बोले जयगुरुदेव।

❀ ❀ ❀

स्वामी जी महराज का कार्यक्रम

परमपूज्य स्वामी जी महराज जुलाई माह में १ को वाराणसी २ से ६ तक इलाहाबाद में ७ को रायपुर म० प्र० ८ बैकुण्ठपुर और रीवा ९ को इलाहाबाद रहे। १० जुलाई कलकत्ता १३ को देवघर बैद्यनाथ धाम १४ आसनसोल १५ को झरिया, १७ इलाहाबाद जौनपुर होते हुये आजमगढ़ आये। १८ जुलाई आजमगढ़ रहे।

१९ और २० जुलाई को गुरुपूर्णिमा के उपलक्ष में विशेष सतसंग गोरखपुर में नार्मल स्कूल के मैदान में रहा। वहां से स्वामी जी महराज फैजाबाद लखनऊ होते हुये मथुरा चले गये।

मथुरा से परमपूज्य स्वामी जी महराज १२ अगस्त को गाजियाबाद में सतसंग किये ११-१४ दिल्ली उसके बाद परम पिताजी १५ को जयपुर १६ को अहमदाबाद १७ को बम्बई १८ को कलकत्ता में रहेंगे।

जन्माष्ठमी का विशेष सतसंग

२५ और २६ अगस्त को जन्माष्टमी का विशेष सतसंग इलाहाबाद में होगा। प्रेमी जन के० पी० इण्टर कालेज के मैदान में ही रहेंगे भी। सतसंग २५ ता० को शाम ५ से ७ बजे तक होगा। फिर २६ ता० को सबेरे टीका का कार्यक्रम रहेगा। पुनः दिन में ही सतसंग होकर कार्यक्रम समाप्त हो जायेगा।

आवश्यक सूचना

(१) प्रेमी पाठकों को सूचित करते हैं कि जो ग्राहक मई ७७ से ग्राहक बने थे उनका वार्षिक चन्दा अप्रेल ७८ में समाप्त हो गया। अब मई से अगस्त तक ४ अंक उन्हें बिना पैसा प्राप्त किये दिये गये। पिछले माह उन्हें अलग से सूचना भी दी गई। अतः जिन्होंने वार्षिक चन्दा भेज दिया उनका अमर सन्देश तो अनवरत आता रहेगा। किन्तु जिन्होंने कोई सूचना नहीं दी उनके अमर सन्देश इस अंक से रोके जा रहे हैं। यदि वे ग्राहक रहना चाहते हैं तो नये वर्ष का वार्षिक चन्दा शीघ्र भेजें।

(२) नये ग्राहक कृपाकर यह अवश्य लिख दिया करें कि वे नये ग्राहक है। इतना मात्र लिख देने से हमारा बहुत सा समय बच जाता है। पता अवश्य पूरा पूरा और साफ साफ मनी-आर्डर फार्म के नीचे वाले भाग पर भी जरुर लिख दिया करें। वही हिस्सा फाड़ कर मेरे पास रह जाता है। अगर उस पर आप पता साफ नहीं लिखते हैं तो यहां कार्यालय में मनीआर्डर लेते समय आप का नाम पता लिखना पड़ता है।

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ कर सतसंग कीजिये जीवन को सत्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

❀ गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तः करण को पवित्र बनाकर गुरू के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

मधु संचय

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरू मिलना चाहिये।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश
वर्ष २१, अंक ५ सितम्बर १९७८

रजिस्टर्ड एल-4
Licence No. 1 Licenced to
Post without Prepayment

क्रमांक पुस्तक का नाम	मूल्य
१–साधक विघ्न निरुपण	६० पैसे
२–याद रक्खो गुरु के वचन	४० पैसे
३–प्रति दिन के विचार	६० पैसे
४–परमार्थी उपदेश	७५ पैसे
५–सन्तमत में सच्चा निर्माण	६० पैसे
६–तुलसी वाणी	६० पैसे
७–धम लोकमार्ग	५० पैसे
८–ज्ञान रश्मि	७५ पैसे
९–हम गुरु को कितना मानते हैं	७५ पैसे
१०–उपरोक्त ९ पुस्तकों की गत्ते की जिल्द	५ रु०

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या 1802

श्री .... रामकिशोर यादव

पता

—: पद्य में :—

११–प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ३) रु० डाक खर्च कम से कम २) । पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें । वी० पी० भेजने का नियम नहीं है ।

१२–स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य १०) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य १०) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ५) इसका रुपया व्यवस्थापक स्वधर्म साप्ताहिक, २३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़ के पते पर भेजें ।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—
व्यवस्थापक 'अमर सन्देश'
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्णा नगर मथुरा से
मुद्रक—विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित

Scanned with CamScanner